छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **सप्तम् सत्र**

मंगलवार, दिनांक 25 अगस्त, 2020

(भाद्रपद 03, शक सम्वत् 1942)

[अंक 01]

Web Copy

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	डॉ. चरणदास महंत
उपाध्यक्ष	श्री मनोज सिंह मण्डावी
प्रमुख सचिव	श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े

सभापति तालिका

1. श्री सत्यनारायण शर्मा,
2. श्री धनेन्द्र साहू,
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह,
4. श्री शिवरतन शर्मा,
5. श्री देवव्रत सिंह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

सुश्री अनुसुईया उइके

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री	पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)
03.	श्री ताम्रध्वज साहू, मंत्री	लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
04.	श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री	संसदीय कार्य, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
05.	डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री	स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता
06.	श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री	परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि एवं विधायी कार्य
07.	श्री कवासी लखमा, मंत्री	वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग
08.	डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री	नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम
09.	श्री अमरजीत भगत, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति
10.	श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर (पंजीयन एवं मुद्रांक)
12.	श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग
13.	श्री उमेश पटेल, मंत्री	उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

संसदीय सचिवों की सूची

01.	श्री चिंतामणी महाराज	लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध
02.	श्री पारसनाथ राजवाड़े	उच्च शिक्षा मंत्री से संबद्ध
03.	श्रीमती अंबिका सिंहदेव	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री से संबद्ध
04.	श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय	वन मंत्री से संबद्ध
05.	श्री द्वारिकाधीश यादव	आदिम जाति विकास मंत्री से संबद्ध
06.	श्री गुरुदयाल सिंह बंजारे	पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध
07.	श्री इन्द्रशाह मण्डावी	राजस्व मंत्री से संबद्ध
08.	श्री कुंवर सिंह निषाद	खाद्य मंत्री से संबद्ध
09.	डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह	महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध
10.	श्री रेखचंद जैन	नगरीय प्रशासन मंत्री से संबद्ध
11.	सुश्री शकुन्तला साहू	कृषि मंत्री से संबद्ध
12.	श्री शिशुपाल सोरी	वन मंत्री से संबद्ध
13.	श्री यू.डी. मिंज	वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री से संबद्ध
14.	श्री विकास उपाध्याय	लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध
15.	श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर	पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध

.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची
(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
02.	अमरजीत भगत	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
03.	अरूण वोरा	64-दुर्ग शहर
04.	अनिता योगेंद्र शर्मा, श्रीमती	47-धरसींवा
05.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
06.	अंबिका सिंहदेव, श्रीमती	03-बैकुंठपुर
07.	अमितेश शुक्ल	54-राजिम
08.	अनूप नाग	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
09.	आशीष कुमार छाबड़ा	69-बेमेतरा

इ

01.	इंद्रशाह मण्डावी	78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
02.	इंदू बंजारे, श्रीमती	38-पामगढ़ (अ.जा.)

उ

01.	उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती	17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उमेश पटेल	18-खरसिया

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	कृष्णमूर्ति बांधी	32-मस्तूरी (अ.जा.)
03.	किस्मत लाल नंद	39-सरायपाली (अ.जा.)
04.	कुलदीप जुनेजा	50-रायपुर नगर उत्तर
05.	कुंवर सिंह निषाद	61-गुण्डरदेही
06.	केशव प्रसाद चन्द्रा	37-जैजेपुर

ख

01	खेलसाय सिंह	04-प्रेमनगर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ग

01.	गुरू रूद्र कुमार	67-अहिवारा (अ.जा.)
02.	गुरूदयाल सिंह बंजारे	70-नवागढ़ (अ.जा.)
03.	गुलाब कमरो	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)

च

01.	चक्रधर सिंह सिदार	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
02.	चरणदास महंत	35-सक्ती
03.	चंदन कश्यप	84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)
04.	चंद्रदेव प्रसाद राय	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
05.	चिन्तामणी महाराज	08-सामरी (अ.ज.जा.)

छ

01.	छन्नी चंदू साहू, श्रीमती	77-खुज्जी

ज

01.	जयसिंह अग्रवाल	21-कोरबा

ट

01.	टी.एस.सिंहदेव	10-अम्बिकापुर

ड

01.	डमरूधर पुजारी	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)

त

01.	ताम्रध्वज साहू	63-दुर्ग ग्रामीण

द

01.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव
02.	द्वारिकाधीश यादव	41-खल्लारी
03.	देवती कर्मा	88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.)
04.	देवेंद्र यादव	65-भिलाई नगर
05.	देवेंद्र बहादुर सिंह	40-बसना
06.	देवव्रत सिंह	73-खैरागढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ध

01.	धरमलाल कौशिक	29-बिल्हा
02.	धनेन्द्र साहू	53-अभनपुर
03.	धर्मजीत सिंह	26-लोरमी

न

01.	ननकीराम कंवर	20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02.	नारायण चंदेल	34-जांजगीर-चांपा

प

01.	प्रकाश शक्राजीत नायक	16-रायगढ़
02.	प्रमोद कुमार शर्मा	45-बलौदाबाजार
03.	पारसनाथ राजवाड़े	05- भटगांव
04.	प्रीतम राम, डा.	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
06.	पुरूषोत्तम कंवर	22-कटघोरा
07.	प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ.	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)

ब

01.	बृजमोहन अग्रवाल	51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02.	बृहस्पत सिंह	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)

भ

01.	भुनेश्वर शोभाराम बघेल	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02.	भूपेश बघेल	62-पाटन

म

01.	ममता चंद्राकर, श्रीमती	71-पण्डरिया
02.	मनोज सिंह मण्डावी	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03.	मोहन मरकाम	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	मोहित राम	23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
05.	मोहम्मद अकबर	72-कवर्धा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

य

01.	यू.डी.मिंज	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

र

01.	रजनीश कुमार सिंह	31-बेलतरा
02.	रंजना डीपेंद्र साहू, श्रीमती	58-धमतरी
03.	राजमन वेंजाम	87-चित्रकोट (अ.ज.जा.)
04.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
05.	रामकुमार यादव	36-चंद्रपुर
06.	रामपुकार सिंह ठाकुर	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)
07.	रविन्द्र चौबे	68-साजा
08.	रश्मि आशिष सिंह, श्रीमती	28-तखतपुर
09.	रेखचंद जैन	86-जगदलपुर
10.	रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती)	25-कोटा

ल

01.	लक्ष्मी ध्रुव, डॉ.	56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	लखेश्वर बघेल	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

व

01.	विक्रम मण्डावी	89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
02.	विनय जायसवाल, डॉ.	02-मनेन्द्रगढ़
03.	विनय कुमार भगत	12-जशपुर (अ.ज.जा.)
04.	विद्यारतन भसीन	66-वैशाली नगर
05.	विकास उपाध्याय	49-रायपुर नगर पश्चिम
06.	विनोद सेवन लाल चंद्राकर	42-महासमुन्द

श

01.	शकुन्तला साहू, सुश्री	44-कसडोल
02.	शिवरतन शर्मा	46-भाटापारा
03.	शिवकुमार डहरिया, डॉ.	52-आरंग (अ.जा.)
04.	शिशुपाल सोरी	81-कांकेर (अ.ज.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

05.	शैलेश पाण्डे	30-बिलासपुर

स

01.	सत्यनारायण शर्मा	48-रायपुर ग्रामीण
02.	संतराम नेताम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)
03.	संगीता सिन्हा, श्रीमती	59-संजारी बालोद
04.	सौरभ सिंह	33-अकलतरा

24-मरवाही (अ.ज.जा.)	**रिक्त**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 25 अगस्त, 2020

(भाद्रपद-3, शक संवत् 1942)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

समय :

11:00 बजे **राष्ट्रगीत/राज्यगीत**

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के साथ राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हों ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" और राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" की धुन बजाई गई।)

समय :

11:01 बजे **निधन का उल्लेख**

(1) श्री अजीत जोगी, छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री एवं सदस्य विधान सभा ।

(2) श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे, पूर्व मंत्री, छत्तीसगढ़ ।

(3) श्री बलिहार सिंह, पूर्व मंत्री, अविभाजित मध्यप्रदेश,

(4) श्रीमती रजनीगंधा देवी, पूर्व सांसद, लोकसभा ।

(5) भारत-चीन सीमा पर हुई हिंसक झड़प में शहीद जवान ।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री एवं सदस्य श्री अजीत जोगी का दिनांक 29 मई, 2020, पूर्व मंत्री, श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे का दिनांक 19 अप्रेल, 2020, अविभाजित मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मंत्री, श्री बलिहार सिंह का दिनांक 6 जून, 2020, लोकसभा की पूर्व सांसद श्रीमती रजनीगंधा देवी का दिनांक 14 जून, 2020 को निधन हो गया है तथा दिनांक 15 जून, 2020 की रात्रि भारत-चीन सीमा पर हुई हिंसक झड़प में शहीद जवान ।

श्री अजीत जोगी का जन्म 29 अप्रेल, 1946 को पेण्ड्रारोड, तत्कालीन जिला-बिलासपुर में हुआ था । श्री जोगी ने बी.ई. (मेकेनिकल), एल.एल.बी., एम.आई.ई. की शिक्षा प्राप्त की थी । वे प्रारंभ में इंजीनियरिंग कालेज के प्राध्यापक बने पश्चात् यूपीएससी की परीक्षा पास कर पहले आईपीएस फिर आईएएस बने । उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश शासन में दीर्घावधि तक कलेक्टर के पद पर रहने का कीर्तिमान स्थापित किया । उन्होंने सन् 1986 में कलेक्टर की नौकरी छोड़कर कांग्रेस पार्टी से राजनीतिक जीवन की शुरूआत की तथा सन् 1986 से 1998 तक राज्यसभा सदस्य रहे । वे सन् 1998 में रायगढ़ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुए। दिनांक 1 नवम्बर,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

2000 को नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बने । सन् 2004 में महासमुंद लोक सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए तथा मरवाही विधान सभा क्षेत्र से 2003 व 2008 में कांग्रेस पार्टी की टिकट पर छत्तीसगढ़ विधान सभा के सदस्य बने । 2018 में मरवाही विधान सभा क्षेत्र से छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस (जे) पार्टी से छत्तीसगढ़ की वर्तमान पंचम विधान सभा के सदस्य चुने गए । उन्होंने प्राध्यापक, आई.पी.एस., आई.ए.एस., सांसद, राजनेता तथा छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में राजनीतिक सफ़र तय करते हुए प्रदेश तथा देश में अपनी एक विशेष पहचान बनाई । वे कमजोर वर्ग विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्प संख्यकों तथा पिछड़ा वर्ग के विकास के लिए सतत् संघर्षशील रहे । प्रदेश में उनके योगदान को सदैव याद रखा जाएगा । उनके निधन से देश एवं प्रदेश ने एक वरिष्ठ नेता, कुशल प्रशासक तथा समाज सेवी को खो दिया है ।

श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे का जन्म 28 जून, 1949 को ग्राम चक्रवाय, तत्कालीन जिला दुर्ग में हुआ था । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था । वे छात्र जीवन से राजनीति में सक्रिय रहे । वे ग्राम पंचायत झुजना के पंच तथा चक्रवाय पंचायत के सरपंच रहे । उन्होंने सतनामी समाज के राजमहंत पद का दायित्व भी संभाला । कांग्रेस पार्टी की टिकट पर तत्कालीन मारो निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1980 में प्रथम बार अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । तद्न्तर मारो निर्वाचन क्षेत्र से ही सन् 1990, 1993 तथा 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश शासन में राजस्व, धार्मिक, न्यास और धर्मस्व, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, राज्य मंत्री तथा विमानन, जनशिकायत विभाग में मंत्री पद का दायित्व संभाला । छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पश्चात् नवगठित छत्तीसगढ़ में वन एवं पर्यावरण मंत्री बने । उनकी शोषित लोगों को ऊपर उठाने तथा समाज सेवा में विशेष अभिरूचि थी । उनका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन प्रदेश की आम जनता, पिछड़ों एवं गरीबों की भलाई तथा समाजसेवा के लिए समर्पित रहा । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता, कुशल प्रशासक तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री बलिहार सिंह का जन्म 15 जुलाई, 1928 को मंगूवाल पंजाब में हुआ था। उन्होंने एम.ए., एलएल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की थी । उनका मुख्य व्यवसाय वकालत था । उन्होंने सन् 1942 के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया । सन् 1960 में चांपा नगरपालिका के पार्षद तथा सन् 1979 में अध्यक्ष चुने गये । वे भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर सन् 1990 में चांपा निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा मध्यप्रदेश शासन के खाद्य तथा जेल विभाग के मंत्री का दायित्व संभाला । अपने क्षेत्र के विकास के लिए वे सदैव तत्पर रहे । उनका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन समाज सेवा तथा अपने क्षेत्र की जनता की भलाई के लिए समर्पित रहा । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिक तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्रीमती रजनीगंधा देवी का जन्म 31 जनवरी, 1937 को हुआ था । वे सन् 1967 में चौथी लोक सभा के लिए कांग्रेस पार्टी की टिकट पर रायगढ़ लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुईं । वे अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहीं । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेत्री को खो दिया है ।

भारत-चीन सीमा में लद्दाख स्थित गलवान घाटी में दिनांक 15 जून 2020 को भारतीय एवं चीनी सैनिकों के मध्य हुई हिंसक झड़प में अनेक जवान शहीद हो गये तथा अनेक जवान घायल हुए । इस घटना में प्रदेश के जवान श्री गणेशराम कुंजाम भी शहीद हुए । जवानों ने अपने देश की रक्षा करते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया है । शहीद जवानों की कर्तव्यपरायणता को हमेशा याद रखा जाएगा। यह सदन शहीद श्री गणेशराम कुंजाम के साथ-

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साथ अन्य शहीदों को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है । दुख की इस घड़ी में हम सभा के माध्यम से छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से शहीद जवानों के परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट सत्र से और पावस सत्र के बीच में हम लोगों ने अपने अनेक विभूतियों को और साथियों को खोया है। जोगी जी इसी विधान सभा के सदस्य रहे हैं और छत्तीसगढ़ राज्य बनने के तुरंत बाद सबसे पहले मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने वाले व्यक्ति के रूप में हम लोग उन्हें जानते हैं। जोगी जी बहुत ही प्रतिभाशाली रहे। उन्होंने जिंदगी भर पढ़ाई की। उन्होंने एल.एल.बी. और कई विषयों में पढ़ाई की। वे आई.पी.एस. रहे, आई.ए.एस. रहे। उनका सबसे लंबे समय तक कलेक्टर रहने का भी रिकार्ड रहा है। साथ ही वे राज्यसभा के सदस्य भी चुने गये और लोकसभा के सदस्य भी चुने गये। वे कांग्रेस के प्रवक्ता रहे। उनकी विशिष्ट भाषण शैली थी। छत्तीसगढ़ राज्य बनाने के लिए जो अध्यक्षीय समिति बनी थी, वे उसके सदस्य भी रहे। वे कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे और बाद में उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लिया। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है जब आर.के.सी. के जशपुर हाल में पहली विधान सभा सत्र आहूत की गई थी और उस समय उन्होंने जो भाषण दिया था और उसमें उन्होंने कहा था कि हां मैं सपनों का सौदागर हूं। वे सपने देखते थे। वे सर्वहारा वर्गों के लिए हमेशा ही लड़ते रहे। उन्होंने मरवाही से लगातार प्रतिनिधित्व भी किया। छत्तीसगढ़ राज्य बना और उस समय सूखा भी पड़ा हुआ था। उस समय मुझे राजस्व और सूखा राहत विभाग भी दिया था। नया राज्य बना था तब कोष खाली था, उसके बावजूद भी लगभग 15 लाख मजदूरों को रोजगार देना व पानी की व्यवस्था करना एक बड़ी जिम्मेदारी थी और हम सब लोगों ने मिलकर यह किया। उस समय उनके वित्त मंत्री के रूप में आर.सी. सिंहदेव साहब भी थे व चौबे जी भी थे। बहुत सारे साथी जो अभी वर्तमान में यहां पर हैं, वे उस समय मंत्रिमंडल में थे। सत्यनारायण शर्मा जी, धनेन्द्र साहू जी, ताम्रध्वज साहू जी, डॉ. प्रेमसाय सिंह जी, अमितेश शुक्ल जी, अकबर जी ये सब बहुत सारे साथी जो वर्तमान में सदस्य हैं, वे उस मंत्रिमंडल में भी थे। श्री धर्मजीत सिंह जी उस समय विधान सभा के उपाध्यक्ष हुआ करते थे। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उस समय छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की जो नींव डाली गई, उसका यही कारण है कि तीन राज्य बने और उसमें सबसे अच्छा वित्तीय प्रबंधन हमारे छत्तीसगढ़ का रहा। नींव अच्छा होने से मकान अच्छा बनता है और यह बात सिद्ध हो रहा है। वित्तीय प्रबंधन बहुत ही अच्छे ढंग से रहा। हम लोगों ने इसी सदन में अनेक बार उतार-चढ़ाव के दौर भी देखें। हम लोग उनका भाषण सुनते रहे। उनका लंबा अनुभव भी रहा। लोक सभा और राज्य सभा के अनुभव का भी लोग हम लोगों को मिला है। हमें उनके साथ काम करने का अवसर मिला और अनेक स्मृतियां उनके साथ हैं। आप भी उनके साथ काम किये हैं। हम सब ऐसे कोई सदस्य यहां नहीं हैं, जिन्हें उनका कोई व्यक्तिगत अनुभव न हो। अच्छे भी रहे हैं और बुरे भी रहे हैं। मुझे याद है कि जब वर्ष 2008 से वर्ष 2013 के बीच में मैं चुनाव हार गया था। एक दिन विधान सभा सत्र चल रहा था, मैं उसमें आया तो उन्होंने बोला कि भूपेश क्या कर रहे हो? मैंने बोला कि आप लोग सक्रिय हैं, इसलिए मैं आप लोगों के साथ बैठा हूं। यहीं लॉबी की बात थी, उसके बाद वे हाउस आ गये और मैं सदस्य सुविधा शाखा की तरफ चला गया, लौटते वक्त अचानक पोर्च में उनसे मुलाकात हुई। उन्होंने कार में बैठते-बैठते कहा कि भूपेश चाहे तुम पक्ष में सक्रिय रहो चाहे विपक्ष में सक्रिय रहो, सक्रिय रहते हो तभी अच्छा लगता है। अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी बातें हैं, जो हम सबके जहन में उभर आती है। जोगी जी, चाहे सत्ता में रहे तब या विपक्ष में रहे तब, वे जब तक राजनीति में सक्रिय थे, तब तक राजनीति उनके इर्द-गिर्द ही परिक्रमा करती थी। वे राज्य के हमेशा सेन्टर पाईंट में रहते थे। मरवाही जैसे सुदूर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अंचल में जन्म लेकर प्रदेश के राष्ट्रीय राजनीति में उनका दखल होना, निश्चित रूप से उनकी जिजीविशा, उनकी इच्छाशक्ति और उनकी सक्रियता है, वह हर परिस्थिति में सक्रिय रहते थे। उनका बहुत मेजर एक्सीडेन्ट हुआ था। उन्होंने मेडिकल साईंस को भी फेल कर दिया। मेडिकल साईंस भी कहती थी कि जो परिस्थिति है, ओपन हार्ट का आपरेशन और उसके बाद इतना मेजर एक्सीडेन्ट के बाद कोई भी मेडिकल साईंस यह नहीं कहता था कि वे 10 साल से ज्यादा जीवित रहेंगे। लेकिन अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बदौलत उन्होंने उस मेडिकल साईंस की जो बातें हैं, उसको भी उन्होंने झूठा साबित किया और अंतिम समय तक भी वे सक्रिय रहें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वे पिछले सत्र में भी आये थे और वे हमेशा एक अच्छा सुझाव के साथ पूरे डेढ़ साल सक्रिय भागीदारी की। कोरोना के कारण अब कोई सार्वजनिक कार्यक्रम होता तो नहीं है। मुझे याद है कि आखिरी समय 10 फरवरी को पेन्ड्रा नया जिला बनाने का कार्यक्रम हुआ था, जिसमें आप भी सम्मिलित हुए थे, उसमें जोगी जी भी थे, श्रीमती जोगी जी भी थीं। उस समय वे बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि मैं भी मुख्यमंत्री रहा, मेरी भी जिला बनाने की इच्छा थी, लेकिन नहीं बना पाया, 15-20 साल तक कोशिश करते रहे, लेकिन नहीं बना। लेकिन तुमने बनाया, इसके लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूं। अध्यक्ष जी, उस दिन वे बहुत प्रसन्न थे। मैं समझता हूं कि कोरोना के कारण छत्तीसगढ़ में वह आखिरी बड़ी सभा थी। उसके बाद आजकल तो वर्चुअल ही चल रहा है। छोटी-मोटी बैठकें हो रही हैं, तब से सार्वजनिक सभाएं बंद हैं। तो 10 फरवरी को आखिरी बड़ा कार्यक्रम था, जिसमें आपके सहित जोगी जी, हम सब लोग सम्मिलित थे। निश्चित रूप से उनकी इच्छा थी, मरवाही-पेण्ड्रा-गौरेला जिला बने और हम लोग उनके जीते जी उसको पूरा किया। वहां पर बहुत सारे कार्यालय खोलने थे, उन्होंने उसके बारे में कहा भी था कि सब कार्यालय खुलने चाहिए तो हम लोगों ने तत्काल कोशिश की सब कार्यालय खुले। उस जिले का सम्पूर्ण विकास हो, यह हम लोगों की कोशिश की है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जोगी जी जीते जी एक मिथक बन गये थे। उनके बारे में बहुत सारी चर्चाएं हाती रहती थीं। वे जीते जी किदवंती बन गये थे। उनकी लेखनी, उनकी भाषण शैली , उनके बातचीत का लहजा, अगर कोई व्यक्ति उनसे मिले तो उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे बहुत सारी भाषाएं जानते थे। वे अनेक धर्मों के बारे में जानकारी रखते थे। तो जोगी जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके जाने से निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ को एक अपूरणीय क्षति हुई है। इस सदन को भी अपूरणीय क्षति हुई है। उनके परिवार को भी अपूरणीय क्षति हुई है। उनके निधन से, शोकाकुल परिवार को दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे साथ ही दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भी मैं प्रार्थना करता हूं। अध्यक्ष महोदय, डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी अनेक बार विधायक रहे, मध्यप्रदेश में मंत्री रहे, छत्तीसगढ़ में भी मंत्री रहे। उनके साथ हम लोगों को बैठने का, विधान सभा में काम करने का अवसर मिला। चकरवाय में हमेशा 31 दिसंबर को वह एक बड़ा कार्यक्रम करते थे और अनेक बार हम लोग वहां गये। एक पारिवारिक संबंध था क्योंकि एक ही जिले के थे, अब बेमेतरा अलग जिला बन गया लेकिन हर कार्यक्रम में वह बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। उनकी जो सक्रियता है, वह सतनामी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे। सामाजिक रूप से भी आप देखें तो वह हमेशा क्षेत्र के विकास के लिए चिन्तित रहते थे। अपने लोगों के लिए वह हमेशा संघर्ष करते रहे। भाई धृतलहरे जी के जाने से निश्चित रूप से हम सबको एक अपूरणीय क्षति हुई है। वन मंत्री के रूप में, स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उन्होंने जो काम किया है वह हमेशा याद किया जायेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय, श्री बलिहार सिंह जी, आपके गृह जिला चांपा विधानसभा क्षेत्र से चुनकर आये थे। पटवा जी की सरकार में खाद्य एवं जेल मंत्री के रूप में उन्होंने काम किया। सार्वजनिक जीवन में उनकी छबि अत्यंत मिलनसार और निर्बाध राजनीतिज्ञ के रूप में रही है। उनके निधन से एक अपूरणीय क्षति हुई है। अध्यक्ष महोदय, मैं उन्हें भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, सारंगढ़ राजपरिवार से राजा नरेशचन्द्र जी हमारे छत्तीसगढ़ से पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। हालाकि कम समय 13 दिन के लिए मुख्यमंत्री बने लेकिन वह छत्तीसगढ़ से बने थे। उनकी जो पुत्री हैं श्रीमती रजनीगंधा देवी जी वह चौथी विधानसभा के लिए निर्वाचित हुईं थीं। रायगढ़ लोकसभा के सांसद के रूप में भी उन्होंने सेवाएं दीं। बहुत पिछड़े हुए इलाके का वह प्रतिनिधित्व करती थीं। उनके निधन से निश्चित रूप से एक अपूरणीय क्षति हुई है।

अध्यक्ष महोदय, इसी के साथ ही भारत-चीन सीमा में जो हिंसक झड़प हुई है उसमें जो 20 जवान शहीद हुए थे उसमें हमारे छत्तीसगढ़ के श्री गणेश कुंजाम जी की भी शहादत हुई है। देश की सीमा की सुरक्षा में हमारे छत्तीसगढ़ का भी योगदान रहा है। मैं उन्हें नमन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, अभी वैश्विक महामारी करोना के कारण भी पूरी दुनिया में बहुत सारे लोगों की लाखों की तादाद में मौत हुई है। अध्यक्ष महोदय, उस लड़ाई को अभी भी लड़ रहे हैं और पूरी दुनिया में वह जारी है। उसमें भी बहुत से लोगों की मौत हुई है मैं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, नक्सली घटना हमारे लिए नई नहीं है लेकिन इस बीच में किनिनपा में 17 जवान शहीद हुए और लड़ते हुए, नक्सलियों को मारते हुए उन्होंने अपनी शहादत दी। उन्हें भी मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, पुन: सभी दिवंगत आत्माओं को नमन करते हुए उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए, अपने दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए, उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री और एक प्रशासनिक अधिकारी को खोया है। आज वह हमारे बीच नहीं हैं। उनके बारे में कहा जा सकता है कि वह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन में उल्लेखनीय कार्य किए। चाहे शिक्षा के अध्ययन के माध्यम से हम कहें या परीक्षाएं पास करने की बात कहें, मैकेनिकल इंजीनियर के रूप में, उनका एल.एल.बी. करना, एम.आई.टी. परीक्षा में पास होना, उसके साथ ही आई.पी.एस. के रूप में परीक्षा में सफल होना, आई.ए.एस. के रूप में सफल होना तथा एक कुशल प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उनका काम हम सब लोगों ने देखा है। उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश में कलेक्टर के रूप में कई जिलों में काम किया। छत्तीसगढ़ में भी कलेक्टर के रूप में जो उन्होंने काम किया है और कलेक्टर के रूप में काम करते हुए राजनीति के क्षेत्र में उनका लगाव रहा, जो उन्हें राजनीति में खिंचकर ले आयी। वे राज्यसभा के सांसद के रूप में निर्वाचित हुए। लोकसभा रायगढ़ से निर्वाचित होकर आये और अखिल भारतीय प्रवक्ता के रूप में भी हमने उनको काम करते हुए देखा है। एक पेण्ड्रा जैसे छोटे से कस्बे से निकलकर उन्होंने हिन्दुस्तान की राजनीति में अपनी पहचान बनायी। आज मैं यह कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तान की राजनीति में जो भी दल के वरिष्ठ नेता हैं ऐसा कोई नहीं होगा, जिनका व्यक्तिगत संपर्क नहीं होगा या उनके

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बारे में उनको जानकारी नहीं होगी। निश्चित रूप से हमारे सामने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व है। हिन्दुस्तान के राजनेताओं बीच उनकी एक अमूल्य पहचान है और वे पहचान बनाने में सफल हुए हैं। जब इसके बाद छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो यहां के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लिये, हम सब लोग उस शपथ में शामिल थे। उसके बाद में राजकुमार कॉलेज में तीन दिनों के विधान सभा हुई। यहां पर पहली बार जो साढ़े 7 हजार करोड़ रूपये का बजट पारित हुआ। उस समय अकाल की स्थिति थी, उस अकाल की स्थिति में लोगों को रोजगार देने की चुनौती थी। इन सारे विषयों को लेकर जोगी जी ने जो काम किया। उस समय मेरे ख्याल से बृजमोहन जी, नारायण चंदेल जी, अजय चन्द्राकर, शिवरतन शर्मा जी, हम सब लोग विधायक थे। 3 वर्ष हम लोग मध्यप्रदेश से अलग होकर आये थे। हम सबको उनके साथ नजदीक से काम करने का अवसर प्राप्त हुआ था । जोगी जी के मुख्यमंत्री के कार्यकाल में खासकर हम लोगों ने उनके जीवन का संघर्ष देखा है। एक तरफ सरकार की कार्ययोजना थी और उस कार्ययोजना को लेकर यहां के जो ऐसे पीड़ित लोग हैं उनको मुख्यधारा में कैसे ला सकें, उनको समाहित कैसे कर सकें, ये उनकी मूल भावना रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, उसके बाद में महासमुंद से चुनाव लड़े और चुनाव लड़ने के बाद लोकसभा के सांसद के रूप में जीतकर आये। उस समय वे दुर्घटनाग्रस्त हुए, डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे और उनको रातोंरात ले जाया गया कि उनका जीवन कैसे बच सके, उसके लिए उपाए किये गये। उनको भेजा गया। उस अवधि के बाद भी वे जिन परिस्थितियों में रहे हैं। मैं ये कह सकता हूँ कि उनके जीवन का संघर्ष कम नहीं रहा है। चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो, अन्य क्षेत्र में हो। जीवन कम पड़ गया, लेकिन उनका संघर्ष खत्म नहीं हुआ। ऐसी जीवटता के साथ में काम करने वाले बिरले लोग ही होते हैं, जिनमें जोगी जी का नाम है। उसके साथ में एक लेखक के रूप में छत्तीसगढ़ की जीवन शैली को कैसे उकेरा जा सकता है, ये उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से सिद्ध किया है। हम लोग समाचार पत्रों में उनकी लेखनी को भी देखते थे, जो वे लिखते थे। इसके साथ ही साथ में जो उनमें अद्भुत कला, वाक् पटुता, बोलने की शैली थी। यदि जोगी जी किसी कार्यक्रम में गये हैं तो उनको लोग सुनने के लिए जरूर जाएंगे। हम पट्ट छत्तीसगढ़ी की जो बात करते हैं पूरे प्रदेश में उनका भाषण लगभग छत्तीसगढ़ी में ही हुआ और लोग उनको दूर-दूर से सुनने के लिए जाते थे कि जोगी जी क्या बोलने वाले हैं। पत्रकारों के लिए भी यह जिज्ञासा का विषय रहता था कि जोगी जी क्या बोलने वाले हैं। मैं यह कह सकता हूं कि उनको छत्तीसगढ़ी में महारत हासिल थी । जिस प्रकार से उन्होंने छत्तीसगढ़ प्रदेश, छत्तीसगढ़ी भाषा को आगे बढ़ाने का काम किया, उनके संपूर्ण भाषण के कूट में इस बात की हमको झलक मिलती है। इसके साथ में उनके जीवन के विभिन्न कार्य हैं और जिस प्रकार से उन्होंने पूरे जीवन में संघर्ष किया है, आज मैं यह कह सकता हूं कि ऐसे बहुत लोग ही होंगे कि जो छोटे से कस्बे से निकल करके अपनी इतनी बड़ी पहचान बनाने में सफल हों, माननीय जोगी जी उसमें सफल रहे हैं। हमने एक वरिष्ठ राजनेता, कुशल प्रशासनिक अधिकारी, समाजसेवक को खोया है। मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और इस असहनीय दु:ख की घड़ी में परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी, हमारे बिल्हा विधानसभा से लगा हुआ मारो विधानसभा क्षेत्र से प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने चक्रवाय पंचायत के सरंपच के रूप में अपना राजनीतिक जीवन प्रारंभ किया और उसके बाद मध्यप्रदेश में अनेक बार जीत करके आये और जीत करके आने के बाद में उन्होंने सरकार में विभिन्न विभागों के मंत्री के रूप में दायित्व संभाला। डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी एक ऐसे विधायक रहे हैं, जो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पार्टी से हट करके निर्दलीय विधायक के रूप में जीत करके आने आने में सफल हुए हैं और अपनी पहचान बनाई है। स्वाभाविक रूप से उनका समाज के प्रति लगाव था, खास करके निर्धन, शोषित और पीड़ित लोगों की सेवा में डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी निरंतर सेवा में लगे रहे। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद वन, पर्यावरण मंत्री के रूप में उन्होंने दायित्वों का निर्वहन किया और इस छत्तीसगढ़ के विकास की दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को अदा किया है। मैं ऐसे दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बलिहार सिंह जी के बारे में हम सबको मालूम है कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे। उनकी सरलता और सादगी को हम सब लोगों ने करीब से देखा है। वास्तविक में दलगत राजनीति से ऊपर उठ करके एक पालक की जो भूमिका होनी चाहिए, इस प्रकार की छवि बलिहार भैया की रही है। मैं यह कह सकता हूं कि वह एक संतोषी जीव थे, जिनको मैंने कभी गुस्से में नहीं देखा, उनके मन में कभी असंतोष नहीं दिखा। चाहे पार्टी के प्रत्याशी को लेकर के बात आई हो या विभिन्न मसलों में हो, वह एक लाईन से स्वीकार करने वाले आदमी थे। नगरपालिका चांपा के पार्षद के रूप में, अध्यक्ष के रूप में उन्होंने दायित्व का निर्वहन किया। उसके बाद अविभाजित मध्यप्रदेश में चांपा से विधायक चुने गये। सुन्दरलाल पटवा जी के मंत्रिमंडल में मंत्री रहे और खाद्य और जेल मंत्री के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन किया। वास्तविक में आज की राजनीति के युग में यह कह सकते हैं कि राजनीति से हट करके राजनीति में काम करने वाले जिनको संत की श्रेणी में कहा जाता है, ऐसे हमारे बलिहार भैया रहे हैं। मैं इस अवसर पर भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी का रायगढ़ की सांसद निर्वाचित होना और अपने कार्यकाल में रायगढ़ की जनता की सेवा करना, निश्चित रूप से वह जिस परिवार से आईं, उस परिवार की पृष्ठभूमि उन्हें जो विरासत में मिली है, उसके अनुरूप उन्होंने कार्य किया है। लोगों के बीच में उनकी लोकप्रियता रही । मैं ऐसी श्रीमती रजनीगंधा देवी जी की भी आत्मा की शांति के लिये भगवान से प्रार्थना करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सबको मालूम है कि भारत-चीन सीमा गलवान घाटी में 15 जून को जो घटना हुई और उसमें हमारे 20 जवान शहीद हुए । साथ ही हमारे छत्तीसगढ़ के लिये गौरव का विषय रहा कि श्री गणेशराम कुंजाम जी भी उस घटना में शहीद हुए हैं । उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए इस देश की सुरक्षा के लिये, इस देश के सम्मान के लिये जो अपना बलिदान दिया है वह बलिदान बेकार नहीं जाएगा । मैं भगवान से यही प्रार्थना करूंगा कि इस घटना में हमारे जितने जवान शहीद हुए और श्री गणेशराम कुंजाम जी को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं कि भगवान उनको अपने चरणों में स्थान दे । साथ ही वैश्विक कोराना में हम देख रहे हैं कि पूरी दुनिया में लाखों लोगों की मृत्यु हुई है और छत्तीसगढ़ में भी कोरोना से जो मृत्यु हुई है और भी हमारे जवान जो नक्सली क्षेत्रों में काम करते हुए शहीद हुए हैं । मैं उन सभी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भारतीय जनता पार्टी विधायक दल की ओर से और साथ ही अपनी ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रदेश के 4 बड़े-बड़े नेता दिवंगत हो गए । श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी बहुत ही लोकप्रिय नेता जिन्होंने निर्दलीय चुनाव भी जीता और उन्होंने छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में अपनी सेवाएं दीं । श्री बलिहार सिंह जी के बारे में यह कहा जाता है कि वे बेहद ईमानदार और साधारण व्यक्ति के जीवन को जीने वाले व्यक्ति थे । मैं श्रीमती रजनीगंधा देवी जी के बारे में जानता तो नहीं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लेकिन मैंने सुना है कि वे सारंगढ़ राजघराने की राजकुमारी हैं और उन्होंने भी सांसद और विधायक के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री अजीत जोगी जी का जहां तक प्रश्न है वे इस प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री बने । प्रतिभावान छात्र से शिक्षक, शिक्षक से प्रशासक और प्रशासक से शासक । दुनिया में हिंदुस्तान में 3 पद होते हैं एक डी.एम., एक सी.एम. और एक पी.एम. । जिंदगी में सबकी चाहत होती है कि वह या तो डी.एम. बन जाये, सी.एम. बने या पी.एम. बने । उन्होंने प्रदेश के पहले सी.एम. के रूप में अपनी सेवाएं इस प्रदेश को दी । वे सहज थे, सरल भाषा में बोलते थे, मंत्रमुग्ध करने वाली बात कहते थे । प्रबल इच्छाशक्ति के धनी थे । जैसा कि मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जशपुर हॉल में उन्होंने कहा था कि हां मैं सपनों का सौदागर हूं । उनकी इच्छा थी कि वे 100 वर्ष जीएं । अब यह भी इच्छा वही पाल सकते थे कि मैं 100 वर्ष जीउंगा । वे प्रकृति से भी टकराने की ताकत सोचते थे । योग्य प्रशासक थे, मुखर वक्ता थे, कुशल राजनीतिज्ञ थे । गांव, गरीब और किसानों में बदलाव लाने के लिये उनमें बहुत दृढ़ इच्छाशक्ति थी ।

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने गरीबी को बहुत नजदीक से देखा । उन्होंने अभाव में जिंदगी जी परंतु उसके बाद भी वे बहुआयामी व्यक्तित्व के मालिक बने । छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ियों का विकास उनकी प्राथमिकता में हमेशा रही है । अनेक पदों पर कार्य करते हुए जब वे मुख्यमंत्री बने तो मुख्यमंत्री बनने के बाद ही रात को मध्यप्रदेश इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड को तोड़कर के छत्तीसगढ़ इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड का गठन किया जिसमें आज के माननीय मुख्यमंत्री जी भी उस कैबिनेट में या उस निर्णय में रहे होंगे, उनके मंत्री के रूप में यहां सभी मंत्री करीब-करीब उस समय भी थे । वे कहा करते थे कि यह धंधा वगैरह करने का काम सरकार का नहीं है । बंटवारे में मिले एम.पी.एस.आर.टी.सी को उन्होंने तत्काल भंग किया, उसके कर्मचारियों को संविलित करवाया और छत्तीसगढ़ के बेरोजगारों को मोटर चलाने का परमिट जारी किया । जब अर्जुन सिंह जी मुख्यमंत्री थे उस समय तेंदूपत्ता खरीदी का निर्णय भी उन्हीं के नेतृत्व में हुआ था और वही तेंदूपत्ता नीति आज भी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में लागू है । जिससे हमारे गांव में रहने वाले तेंदूपत्ता संग्राहकों का कल्याण हो रहा है और उन्हें कुछ राशि उपलब्ध हो रही है अन्यथा ये सारे पैसे ठेकेदारों के घर पहुंच जाते थे । हिंदुस्तान में पहली बार किसी प्रदेश की सरकार ने धान खरीदी का निर्णय लिया और उस समय काफी कम बजट था, मेरे ख्याल से 2-4-5 हजार करोड़ के बजट में ही पूरा प्रदेश चलता रहा होगा । मैं सरकार में नहीं था इसलिए बजट के बारे में बहुत ज्यादा आंकड़े अभी नहीं दे पाउंगा । उन्होंने तय किया कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी भी होगी और अकाल की स्थिति थी तो काम के बदले अनाज योजना लागू की, क्योंकि उस समय पैसा नहीं था इसलिए काम के बदले अनाज योजना की शुरूआत करके उन्होंने गांव-गांव में काम दिया, पलायन रोका और गांव के लोगों को अनाज का वितरण कराकर उनकी मजदूरी का भुगतान करवाया ।

अध्यक्ष महोदय, राजधानी के लिए ग्लोबल टेंडर भी श्री अजीत जोगी जी ने कराया । उस राजधानी का शिलान्यास भी श्रीमती सोनिया गांधी जी जो अभी कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष हैं, तत्कालीन अध्यक्ष थीं, उन्होंने किया था । शहीद वीर नारायण सिंह स्टेडियम की आधारशिला भी रखकर, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम निर्माण की सोच भी जोगी जी ने की, बाद वे स्टेडियम पूरा हुआ और वह अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम पूरे अच्छे स्टेडियमों में से एक है, यह अलग बात है कि आजकल उसमें मैच नहीं हो रहे हैं । पूज्य बाबा गुरू घासीदास जी की तपोस्थली में उन्होंने कुतुब मीनार से तीन गुना ऊंचा जयस्तंभ के निर्माण की परिकल्पना की । उनकी परिकल्पना के मुताबिक दूसरी सरकारों ने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भले ही काम कराया । लेकिन वह सोच अजीत जोगी जी की थी । अजीत जोगी जी केवल यहीं नहीं रूकते, बल्कि जब वे कवर्धा गए तो उन्होंने जिला कवर्धा का नाम कबीरधाम दिया । क्योंकि वहां कबीरपंथियों की संख्या बहुत है । वहां कबीर जी से जुड़े हुए लोग हैं । कबीर के नाम को अमर करने का काम भी श्री अजीत जोगी जी ने करने का एक छोटा सा प्रयास किया । कबीरधाम जिले का नामकरण भी उन्होंने किया ।

अध्यक्ष महोदय, वे फसल चक्र परिवर्तन की बात करते थे । जब वे कहते थे कि छत्तीसगढ़ में केवल धान के भरोसे तरक्की नहीं हो सकती । इस प्रदेश के लिए फसल चक्र परिवर्तन होना बहुत जरूरी है क्योंकि यहां की माटी बहुत अच्छी है । अध्यक्ष महोदय, उस वक्त विरोध हुआ लेकिन उन्होंने इसकी परवाह नहीं की और फसल चक्र परिवर्तन का पहला उदाहरण उन्होंने कवर्धा में शक्कर कारखाना खोलकर दिया । मुझे इस बात की खुशी है कि उस शक्कर कारखाने के खुलने के 9 महीने के रिकॉर्ड समय में, शायद अकबर भाई या प्रेमसाय जी उस समय सहकारिता मंत्री थे । हम सब लोगों ने उसमें रूचि ली थी । उस शक्कर के कारखाने के खुलने से वहां पर आर्थिक तरक्की वहां आई । उन्होंने एक सोच दी । जिसकी आज भी जरूरत है क्योंकि फसल चक्र परिवर्तन करने से किसान कैश क्रॉप लेगा तो उसके पास पैसा रहेगा, ऐसी सोच उनकी थी । बाद में फिर और भी शक्कर कारखाने खुले । अध्यक्ष महोदय, वे बहुत जीवट व्यक्ति थे । शरीर कमजोर था, एक्सीडेंट हुआ था, व्हीलचेयर में बैठकर, कभी कोई कल्पना भी कर ले तो सिहर जाएगा, व्हीलचेयर पर बैठकर तू डाल-डाल और मैं पात-पात की राजनीति वे करते थे । वे जितना दौरा करते थे शायद दो पैरों पर चलने वाला व्यक्ति भी उतना दौरा नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने उनको बहुत नजदीक से देखा है । शरीर कमजोर था, इरादा फौलादी था । उनका एक उदाहरण देना चाहता हूं कि करूणा शुक्ला जी बिलासपुर लोक सभा क्षेत्र की उम्मीदवार थीं और वे 12-1 बजे कहीं से दौरा करके बिलासपुर के पास उनकी एक सभा थी, वहां से मुझे एक फोन आया। मैं उस दिन गोड़खामी में उनकी सभा का इंतजाम करके खड़ा था। मुझे फोम आया। मुझे खबर आयी और उनके आदमियों ने मुझे खबर किया कि धर्मजीत को बोलो कि एक टावेल टरकिस का और दो बॉटल चिल्ड ठंडा पानी लेकर वहां रखेंगे। वे आये और उन्होंने सभा को संबोधित किया। करूणा शुक्ला जी के पक्ष में प्रचार किये और जब हेलिकॉप्टर में बैठे तो वहीं से मुझे भी उनके संग सेधगंगा जाना था। वे हेलिकॉप्टर में बैठते ही लथ्थप थे। उन्होंने अपने सिर पर टॉवेल डाला और बोले कि दोनों पानी बॉटल को मेरे सिर के ऊपर उड़ेल दो और वह चिल्ड पानी उन्होंने अपने सिर पर उड़ेला और जब वे फास्टरपुर सेधगंगा पहुंचे, तब तक वे नॉर्मल हो गये थे और वहां उतरकर उन्होंने अपनी सभा को संबोधित किया। मैंने कभी-कभी उनकी छोटी सी बेबसी भी देखी। जब वे यहां पर बैठते थे तो एक किसी मसले पर जो कि इसी सरकार की बात है। किसी मसले पर मुझे लगा कि इसमें अजीत जोगी को बोलना चाहिए था। जब वे नहीं बोले तो मैं उठकर उनसे पूछने गया कि जोगी साहब आप इस मामले में क्यों नहीं बोले? वे बोले कि मेरा हाथ माइक तक नहीं पहुंच पा रहा था। क्योंकि आजू-बाजू में बैठने वाले कुलदीप जुनेजा जी नहीं है। कोई न कोई सदस्य वहां जैसे प्रमोद शर्मा उन्हें मदद कर देते थे। तब मुझे लगा कि यह जोगी जी के संग थोड़ा ठीक नहीं हुआ। मैं आपके पास गया और आपने बड़ी कृपापूर्वक न केवल माइक बड़ा करवाया, बल्कि वह बटन भी आपने उनकी गोद में रखवा दिया, जिससे वे अपना बटन दबाकर बात कर सकते थे। जब आप पहली बार मुख्यमंत्री बनकर आये तो जोगी जी का रात में फोन आया कि कल माननीय मुख्यमंत्री जी से मिलने जाना है और मैंने कहा कि पहली बार आ रहे हैं। इतना लड़ाई-झगड़ा हम लोगों के बीच में था। अलग पार्टी बनी हुई थी। हमें अभी तत्काल नहीं जाना चाहिए। जोगी जी बोले कि कुछ नहीं होता। हम लोग चलेंगे। वे हमारे भी मुख्यमंत्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हैं। हम उनसे मिलने जायेंगे। हमने टाइम मांगा और आपने टाइम दिया और वहां जोगी जी बिना किसी झिझक के और बिना किसी संकोच के मिलने गये। आपने भी कृपापूर्वक मुलाकात की। जोगी जी हिचकते नहीं थे, चाहे वह कोई भी सभा हो। चाहे कोई भी मंत्री हो। चाहे उनसे उनके मतभेद हों। चाहे उनका उनसे राजनीतिक रिश्ते ठीक न हो। वे बात करने में और कोई भी काम करने में कभी भी नहीं हिचकते थे। वे दिन और रात सोचते थे कि मैं वहां दौरा करूंगा, यहां दौरा करूंगा, ऐसा करूंगा, वैसा करूंगा। उन्होंने अंग्रेजी की पढ़ाई के लिए भी कहा कि अंग्रेजी की पढ़ाई में हम लोग इसलिए पिछड़ते हैं, क्योंकि छत्तीसगढ़ में हम लोग अंग्रेजी की पढ़ाई को बचपन से शुरू करवायेंगे, तब बच्चे भी अंग्रेजी बोल पायेंगे। स्वाभाविक रूप से हम सब लोग अनुभव करते हैं। हमारे जमाने में अगर अंग्रेजी की पढ़ाई होती तो हम भी दिल्ली में बढ़िया-बढ़िया भाषण नहीं दे लेते। हम लोग हिन्दी में तो बोल लेते हैं। इसलिए आने वाली पीढ़ी को अंग्रेजी पढ़ानी चाहिए। यह जोगी जी की इच्छा थी। सरकार को भी उसे पालन करने की दिशा में काम करना चाहिए। मैंने उन्हें आज तक चाहे वह कांग्रेस छोड़ दिये थे, तब भी श्रीमती सोनिया गांधी के खिलाफ कभी भी बोलते नहीं सुना है। वे यह ताकीद भी देते थे कि उनके बारे में कोई भी गलत बात कोई नहीं करेगा। सी.ए.ए. का जब एक मसला आया। मैंने अखबार में पढ़ा था कि विधान सभा में जो अभी हमारी सरकार है, वह शायद यहां पर सी.ए.ए. के विरोध में एक प्रस्ताव रखने वाली है। ऐसा बजट सत्र के पहले मैंने अखबार में पढ़ा था। मैं जोगी जी के पास गया और बोला कि इसमें आपका क्या व्यू है ? आपका क्या स्टैण्ड है ? वे बोले कि मैं तो सी.ए.ए. के विरोध में भाषण दूंगा। मैंने कहा कि मैं तो सी.ए.ए. के पक्ष में भाषण दूंगा। आधे घंटे तक बहस होती रही और आखिर में यही तय हुआ कि जोगी जी सी.ए.ए. के विरोध में भाषण देंगे और मैं सी.ए.ए. के पक्ष में भाषण दूंगा और हम सब तैयारी करके भी रखे हुए थे। मतलब यह है कि वे किसी की बात को सुनते थे। Discuss होता था। कई मामलों में खुलकर चर्चा होती थी। मैंने कई ऐसे-ऐसे मामले पूछे हैं, जिसे मैं सदन में नहीं बोल सकता। उन्होंने बहुत ही अफसोस जाहिर किया कि इस प्रकार के आरोप लगे कि मैं क्या बताउं? चलिए, वह एक अलग चीज है। अध्यक्ष महोदय, मैं एक और उदाहरण बताना चाहता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी, एक खुड़िया डेम है, जिसका नाम राजीव गांधी डेम है। राजीव गांधी जी के नाम से वह डेम है। वहां एक हजार एकड़ जमीन सिंचाई विभाग की थी। मैंने जोगी जी से कहा कि "सर" 1 हजार एकड़ जमीन है, वहां बेचारे लोग टेम्परेरी खेती करते हैं, उनको पट्टा दे दीजिये। उन्होंने तत्काल प्रशासन को आदेश किया, शायद असवाल साहब राजस्व सचिव थे, मैं 4 दिन के अंदर उनको पट्टा बांटने जाऊंगा और चौथे दिन पट्टा बनवाकर सिंचाई विभाग की जमीन को वहां के स्थानीय निवासियों, गरीबों को पट्टा बांट दिया। यह उनकी प्रशासनिक दृढ़ता थी।

अध्यक्ष महोदय, जोगी जी मुख्यमंत्री बने थे, मुझे जोगी जी के पास 15-20 दिन के बाद जाना पड़ा। मेरा जोगी जी से उस समय अच्छा सम्बन्ध नहीं था। मैंने जोगी जी के मुख्यमंत्री बनने के खिलाफ बगावत कर दी थी। मैं 14 विधायकों को रखकर निकला था। यहां बगावत करने का तेवर नहीं है। बस 6 विधायक बचे थे, बाकी सब मुख्यमंत्री जी के पास चले गये थे। मुझे मालूम था कि मुख्यमंत्री जी मेरे से बहुत नाराज हैं। लेकिन अचानकमार अम्यारण्य में पुलिस के लोगों ने वहां के आदिवासियों के साथ बर्बरतापूर्वक अत्याचार किया था। जब मैं मुख्यमंत्री जी के पास गया और कहा कि साहब यह अत्याचार हुआ है। अगर मैं अपने लोगों की रक्षा नहीं कर सकता तो मुझे विधायक रहने का अधिकार नहीं है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूं कि इन गरीब आदिवासियों को न्याय दिलाईये। अध्यक्ष महोदय, मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मैं जब बिलासपुर से रायपुर गया तो वहां के एस.पी. को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मध्यप्रदेश रिलीफ कर दिया गया और रात 10.00 बजे छत्तीसगढ़ का पहला न्यायिक जांच आयोग का गठन अजीत जोगी जी ने किया और उन्होंने न्याय को सम्मान दिया।

अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का मतलब यह है कि वे सुनते थे। डिस्कस होता था। मतभेद भी होते थे तो उस पर चर्चा करके कोई रास्ता निकालते थे। लेकिन वे दूसरों की बात भी सुनते थे। उनकी अपनी सोच थी। ऐसा ही किसी का व्यकित्व नहीं बनता है। जीवन का विशाल अनुभव, अच्छे और बुरे का अनुभव, अध्ययन, संस्कार, संस्कृति सब मिलकर व्यक्तित्व बनता है और हमने गरीबों के एक मसीहा को खो दिया है। जब मैं यहां रहता था, सदन में जब वे बैठते थे, तो मैं यहां से उठकर जाकर उनको Good Morning Sir बोलता था। वे बोले थे Good Morning धर्मजीत, How are you तो मैं बोलता था Sir fine. हम लोग इतनी ही अंग्रेजी सीखे थे, इतना ही अंग्रेजी बोलते थे। अब वह Good Morning भी यहां नहीं कह सकूंगा। उनकी कुर्सी खाली हो गई है। अध्यक्ष महोदय, उनकी याद आयेगी। परन्तु वे छत्तीसगढ़ के गरीबों के दिलों में हमेशा रहेंगे। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि देता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं उन जवानों को भी श्रद्धांजलि देना चाहता हूं, जिन्होंने देश की हिफाजत के लिए अपनी जान की आहुति दी। सीमा पर अभी भी खतरा है। चाहे वह पाकिस्तान की सीमा हो, चाहे वह एल.ए.सी. हो। अध्यक्ष महोदय, कोरोना वारियर्स लोगों को भी सम्मान देना चाहता हूं और उनको श्रद्धांजलि देना चाहता हूं, जिन्होंने अपनी जान को खतरे में डालकर करोड़ों लोगों की जिन्दगी बचाने का काम किया है। न केवल प्रदेश के, बल्कि पूरे देश के कोरोना वारियर्स को सम्मान देना चाहते हैं। हम उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करना चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय, आपने बड़ी कृपापूर्वक समय दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। श्री अजीत जोगी एवं अन्य नेताओं के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

श्री केशव चन्द्रा (जैजेपुर) :- अध्यक्ष महोदय, आज हम सदन में छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि छत्तीसगढ़ के पहले जब मध्यप्रदेश रहा, उसमें राजनीति में जिनका योगदान रहा, उनको श्रद्धांजलि दे रहे हैं। छत्तीसगढ़ बनने के बाद इस प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री माननीय अजीत जोगी जी हमारे बीच में अब नहीं रहे। हमारे सदन के नेता, नेता प्रतिपक्ष, सभी लोगों ने उनके राजनीतिक गुण और कार्यशैली के बारे में बोला है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जिस जिले से हैं और मैं जिस जिले से आता हूं, वहां डेम है। आज जांजगीर चाम्पा जिले में वहां लगभग 85 प्रतिशत सिंचाई किसानों के खेत में होता है। हसदेव दांयी केनाल तो बन गया था, लेकिन हसदेव बांयी केनाल माननीय जोगी जी जब इस प्रदेश के मुख्यमंत्री बने, तो उन्होंने टर्नकी पद्धति से केवल 15 महीने में उस केनाल को बनवाकर जांजगीर-चाम्पा जिले के आधा किसानों को पानी देने का काम किया। अध्यक्ष महोदय, उन्होंने ही छत्तीसगढ़ में पहली बार समर्थन मूल्य पर धान खरीदने का काम किया। यह उनकी कार्यशैली दर्शाती है कि किसानों के प्रति उनकी क्या रूचि थी, गरीब के लिए काम करने की उनकी क्या दृढ़ इच्छाशक्ति थी। माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी कहा कि जब भी वह राजनीति में रहे छत्तीसगढ़ की प्रदेश की राजनीति उनके इर्द-गिर्द रही। मैं ऐसी विभूति को जिन्होंने इस प्रदेश के लिए बहुत कुछ किया, आम आदमी, गरीब, मजदूर के लिए किया, वह आज हमारे बीच नहीं हैं। मैं अपने दल की ओर से, सदन की ओर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। हम कोशिश करेंगे कि जनता के हित में उन्होंने जो काम किये, सकारात्मक पहलू में काम किए उससे हम कुछ सीख सकें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे ही जिले के स्वर्गीय श्री बलिहार सिंह जी रहे। वह बहुत ही सरल, सहज थे। अध्यक्ष महोदय, मैं अपना एक अनुभव बताना चाहता हूं कि पहली बार अगर किसी मंत्री से मेरी मुलाकात हुई, तो

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जब मैं हाईस्कूल की पढ़ाई कर रहा था तो उस समय माननीय बलिहार सिंह जी के साथ हुआ। हम लोग अपने गांव में बालीवॉल की एक प्रतियोगिता करा रहे थे, उनको निमंत्रण देने गये कि पुरस्कार वितरण आपके हाथ से होना है, हमारे अगल-बगल कोई नेता नहीं थे इसलिए किसी नेता को लेकर नहीं गये थे बल्कि स्वत: गये थे। वह बोले कि बच्चे लोग आप लोग करवा रहे हो, मैं जरूर आऊंगा। वह गये और वह मंत्री थे। न उनके साथ कोई गाड़ी थी, वह एक गाड़ी में गये और हमारे कार्यक्रम में पुरस्कार वितरण किए। वह ऐसे सरल, सहज मंत्री थे। आज वह हमारे बीच नहीं रहे। अध्यक्ष महोदय, हमसे ज्यादा उनके बारे में आप बेहतर जानते हैं कि वह कितने सरल, सहज रहे हैं, उनका लोगों से कितना व्यक्तिगत संबंध रहा है। मैं उन्हें भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी जो केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही काम नहीं करते थे बल्कि समाज के क्षेत्र में भी उनका बहुत बड़ा योगदान रहा और यही कारण रहा कि बिना दल के भी उन्होंने चुनाव जीता। वह छत्तीसगढ़ प्रदेश के मंत्री रहे।

अध्यक्ष महोदय, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी जो कि सारंगढ़ राजपरिवार से जुड़ी हुई हैं आज हमारे बीच नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश, समाज में इन सभी लोगों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनके योगदान से, कार्यशैली से हम सब लोगों को भी सीखना चाहिए। मैं इन सभी लोगों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। मैं उन शहीदों को जो देश की रक्षा, हम सबकी रक्षा के लिए अपनी जान न्यौछावर किए उन्हें भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करते हुए कि भगवान इनके परिवार को इतना आत्मबल प्रदान करें कि आज जो दुख की बेला उनके परिवार में आई है उस दुख को सहने की उनमें शक्ति पैदा हो सके। इन्हीं शब्दों के साथ धन्यवाद।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजीत जोगी जी के साथ जब छत्तीसगढ़ राज्य बना तो पहली विधानसभा से ही काम करने का अवसर मिला। मैं ये कहना चाहूंगा कि राजनीति से लेकर, सार्वजनिक जीवन तक, अध्ययन, मनन, चिंतन, साहित्य, समाज और सारे विषयों में जो उनका दृष्टिकोण है वह छत्तीसगढ़ में एक मिथकी चरित्र थे। शायद यह मिलेगा नहीं। यदि आप उनसे पूछते कि सेनेटाईजर कहां अच्छा मिलता है तो शायद वह बता देते कि स्विजटरलैंड या आस्ट्रेलिया में या वेनिस में या मिलान में सबसे अच्छा मिलता है। उनसे आप पूछते कि शर्ट कौन सा अच्छा होगा तो वह बता देते कि अभी सबसे अच्छा फैशन मिलान में आया है। यदि पूछते कि कौन की किताब नई प्रकाशित हुई है और किसने उसको प्रकाशित किया है, तो वह यह सब बता देते। मैं उन्हें मिथकी चरित्र इसलिए बोला क्योंकि आज जब तक ओ.बी.सी. आरक्षण, सामान्य वर्ग आरक्षण, एस.सी. आरक्षण, एस.टी. आरक्षण और दुनियाभर के आरक्षण की बात करते हैं तो उन्होंने पेंड्रारोड से निकलकर सब चीजों को तोड़कर यह बता दिया कि प्रतिभा किसी चीज की मोहताज नहीं होती और हर परीक्षा जो अखिल भारतीय स्तर की होती है उसमें उन्होंने अपना स्थान बिना रिजर्वेशन के बनाया, यह एक बड़ी अद्भुत बात है। जो आज के बच्चे या आज के लोग ये कहते हैं कि कि साहब, बिना रिजर्वेशन के नहीं जा सकते।

समय :
12:00 बजे

ऐसे अनेक चरित्र, जिनमें से वह छत्तीसगढ़ का पहला चरित्र था जो ये स्थापित किया कि किसी परिस्थितियों से प्रतिभा मोहताज नहीं होती, उनको आगे आना ही है। जहां तक छत्तीसगढ़ की बात है। आखिरी बार मैं, बृजमोहन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जी, नारायण जी और उनके साथ भाभी जी यात्रा कर रही थी। हम लोग लम्बे समय तक बात करते थे। हम उनके कितने कटु आलोचक थे । माननीय रविन्द्र चौबे जी, हम लोगों के भाषण को अविश्वास प्रस्ताव में सुने हैं। उनको हमने कहा कि हम, आपके लिए ऐसा-ऐसा बोलते थे, आप नहीं थे, ये थे। वे डेमोक्रेटिक आदमी थे और पूरे विमान में यही चर्चा होती रही। उन्होंने कहा कि मैं लाठी चार्ज को जानता नहीं था। मैं बोलकर गया जो आप लोगों से मेरी दूरियां नहीं बढ़ी रहती। मुझे वैसा चित्रित नहीं करते, मेरे बारे में ये-ये नहीं बोलते तो हो सकता है कि छत्तीसगढ़ का राजनीतिक स्वरूप कुछ दूसरा होता। उनकी उपलब्धियों, चीजों पर बहुत सारी बातें हुईं। माननीय अध्यक्ष महोदय, निर्णय वह होते हैं जो समाज को प्रभावित करते हैं। छत्तीसगढ़ के उस संक्षिप्त काल में उनके कटु आलोचक होने के बावजूद उनके कई विषयों में हम और बृजमोहन जी इंटरविनर भी रहे हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ में 60 सालों में 2 प्रतिशत हायर एजुकेशन था। निजी विश्वविद्यालय की परिकल्पना, ये अलग बात है कि उस समय उसका दुरूपयोग हुआ, सुप्रीम कोर्ट ने उसको निरस्त कर दिया, फिर से नये अधिनियम बनाने का सौभाग्य मुझको मिला। जो छत्तीसगढ़ से ही देश भर में गया। धर्मजीत भाई जी ने बहुत सारी उपलब्धियों को बताया। मितानिन, छत्तीसगढ़ का जो स्वास्थ्य सूचकांक है वह लज्जाजनक था, देखने लायक कह रहा था कि लोग क्या कर रहे थे ये समझ में नहीं आता। किसी के बारे में जिम्मेदारी तय करना नहीं चाहता। आज वह अवसर भी नहीं है। मितानिन आज देश की आशा बनी। भारत सरकार ने आशा के नाम से उसको स्वीकृत किया। त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम, आज भी एम.सी.आई. में ये बहस हो रही है कि तमाम् कोशिशों के बावजूद हम चिकित्कों की आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं क्या उसको बढ़ाया जाना चाहिए, क्या उसको तय किया जाना चाहिए । चाहे वह धान खरीदी का मैटर हो, इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड का हो, एस.सी.आर.टी.सी. का हो, टर्नकी की व्यवस्था हो, अन्यान्य ऐसे निर्णय थे जिन्होंने छत्तीसगढ़ के लोक जीवन को स्थायी तौर पर गहरे से प्रभावित किया और आगे भी करता रहेगा। जो मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ की बिजली पर राज करता था, एक निर्णय से छत्तीसगढ़ सरप्लस बिजली हो गया और अधिनियम एक्ट में लिखा था कि दो सालों तक बिजली का बंटवारा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि यह कहां पर लिखा है कि हम पहले गठन नहीं कर सकते। उस अधिनियम में कहां पर ये लिखा है कि दो साल बाद ही गठन होगा। ये जो चीजें हैं ये बताती हैं उनकी प्रतिबद्धता थी, जब घायल हुए मैं विद्याचरण जी का चुनाव संचालक था, सारे चुनाव प्रचार छोड़कर अस्पताल और अस्पताल से एयरपोर्ट तक पहुंचे और उनको हमने कहां कि आप आएंगे। वे आये और मैं सोचता हूँ कि उतनी जीवटता, आत्मबल मैं नहीं सोचता कि मैंने देखा होऊंगा कि विपरित से विपरित परिस्थितियों में टीके रहना। उन्होंने जो छत्तीसगढ़ के लिए राजनीतिक, प्रशासनिक निर्णय लिये, छत्तीसगढ़ के लिए जो उन्होंने लेखन किया एक समाचार पत्र में रोज कॉलम आता था स्वर्ण जन कण मन, मैं पढ़ता था उसमें उनसे कभी-कभी विचार-विमर्श होता था कि साहब, आप किस समय लिखते हैं, कैसे लिखते हैं, क्या लिखते हैं जो व्यक्तित्व के आयाम होते हैं कोई भी ऐसा आयाम नहीं है जिसको वह छूत नहीं रहे होंगे। उन्होंने छत्तीसगढ़ की ईमानदारी से सेवा की। उन्होंने छत्तीसगढ़ में एक प्रतिमान स्थापित किये। आज इधर जो बैठे हैं बहुत लोग थे जिनके पीछे उनका नाम लगा है। मैं सोचता हूँ कि उनके कार्यशैली में ये दिखेगा कि छत्तीसगढ़ के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है, वह प्रतिबद्धता माननीय जोगी जी के प्रति सही श्रद्धांजलि होगी। छत्तीसगढ़ में जो पिछड़ापन था, उसकी पीड़ा उनके राजनीतिक, प्रशासनिक निर्णयों में झलकती थी। मैं उनको बहुत श्रद्ध सुमन अर्पित करता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री डेहरू प्रसाद धृतलहरे जी के साथ हम लोगों ने काम किया। वे मंत्री थे। कुछ समय तक वे हमारे दल में भी रहे। वे अस्वस्थ थे, लेकिन कुछ भी कहें। वे तीन-चार बार उस क्षेत्र से चुनकर आये। निर्दलीय भी चुनकर आये तो निश्चित रूप से वे उस क्षेत्र, छत्तीसगढ़ और समाज के दिलों में बसते थे। उन्होंने ईमानदारी से छत्तीसगढ़ के एक वंचित समाज की सेवा की। मैं उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलिहार सिंह जी जिस राजनीति के प्रतीक थे । मैं तो सोचता हूँ और लगता है कि वह अब छत्तीसगढ़ से लुप्त हो गया। आप मुझसे 100 गुना ज्यादा अच्छा जानते हैं कि अब वैसे राजनीतिज्ञ होंगे, हम सोच भी नहीं सकते कि सार्वजनिक जीवन में उस तरह से राजनीति हो सकती है, उस पैसे में उस तरीके से चुनाव लड़े जायेंगे, वैसी बात का लोग विश्वास करेंगे, उस चरित्र का विश्वास करेंगे, मुझे नहीं लगता कि अब वह घटेगा, जो मूल्यों पर आधारित, विचारधारा पर राजनीति करते थे, ऐसा लगता है कि वह अंतिम पीढ़ी थी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रजनीगंधा जी से मेरी मुलाकात तो नहीं हुई, पर उनसे रायगढ़ में मेरी मुलाकात हुई। संस्कृति मंत्री जी को बता देता हूं कि राजा चक्रधर की लिखी किताबों के बारे में दो राजाओं से मैं चर्चा करने गया था, उस दौरान थोड़ी सी मुलाकात हुई थी। उनके साथ काम करने का अवसर नहीं मिला, पर वह लोकसभा में सदस्य रहीं तो निश्चित रूप से उस पूरे परिवार का छत्तीसगढ़ के प्रति अपना एक दृष्टिकोण था, उसी परिवार से राजा नरेशचन्द्र सिंहदेव थे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ की एक मुख्यमंत्री के तौर पर भी सेवा की।

माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत-चीन की सीमा पर शहीद गणेश राम कुंजाम जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस सदन के माध्यम से मैं कहूंगा कि हिंसक घटनायें हुईं और 20 जवान शहीद हुए। भारत लोकतांत्रिक देश है, हमने स्वीकार कर लिया, हमारे 20 जवान शहीद हुए, पर दुनिया के हर समाचार पत्रों ने ये बात कही कि चीन ने अपनी ओर की शहादत को छिपाया, कई समाचार पत्रों और चैनलों ने कहा कि 49 से ज्यादा लोगों की मृत्यु हुई। आज ही के पेपर में चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ जरनल बिपिन रॉवत जी का बयान है कि यदि कूटनीतिक, राजनीतिक और दूसरी वार्तायें असफल होती हैं तो हमारे सामने सैन्य विकल्प भी मौजूद है। यह भारत की बढ़ती हुई ताकत और इच्छाशक्ति का परिणाम है कि आज भारत की रणनीतिक ताकत, भारत की सारी चीजों को उस घटना ने पुर्नपरिभाषित कर दिया कि भारत को दूसरी दिशा में, दूसरे तरीके से सोचना होगा। ये साबित हुआ। मैं उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने श्री अजीत जोगी जी, डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी, बलिहार सिंह जी, श्रीमती रजनीगंधा जी, भारत-चीन की सीमा पर हुई हिंसक झड़प में जिन्होंने समाज और देश की सेवा की, नक्सलाईट मूवमेंट में जो हमारे जवान शहीद हुए, उनके निधन का जिक्र किया। आपकी भावना से हम सब लोग आत्मसात होते हैं। अभी इस प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री माननीय श्री अजीत जोगी जी को हमारे सभी साथियों ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके किए हुए कार्यों का यहां पर उल्लेख किया है। इस समाज में हर कोई व्यक्ति पैदा होता है, पैदा होता है, जवान होता है और बुढापे की लाठी का सहारा ले करके दुनिया से विदा हो जाता है। लेकिन ये जमाना, समाज, राष्ट्र उसको स्मरण रखता है जो इस समाज, देश, जमाने के लिए कुछ करके जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय जोगी जी के बारे में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि- " तुम चले जाओगे, याद बहुत आओगे।" माननीय जोगी जी आज नहीं हैं, लेकिन उन्होंने जो प्रदेश की सेवा की, जब छत्तीसगढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राज्य का निर्माण हुआ, उन्होंने जब छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण में नींव रखी और आज जो खुशहाल छत्तीसगढ़ दिख रहा है, 20 साल का छत्तीसगढ़ दिख रहा है, उस समय माननीय जोगी जी ने जिस प्रकार से अपने 3 साल के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ को गढ़ने का प्रयास किया, आज वह छत्तीसगढ़ एक भव्य इमारत के रूप में दिख रहा है। हम लोगों ने राजकुमार कॉलेज के जशपुर हाल में टेंट में विधानसभा में उनका पहला भाषण सुना था। ठेठ छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़ की पीडा को उनके भाषण में हम सब लोगों ने सुना था। माननीय अध्यक्ष जी, माननीय जोगी जो को हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी, निश्चित रूप से जो समाज के अंतिम छोर में रहने वाले व्यक्ति हैं, उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने का उन्होंने काम किया था। आदरणीय बलिहार सिंह जी, माननीय अध्यक्ष जी, आप भी उसी क्षेत्र से रहे, मैं भी उसी क्षेत्र से निर्वाचित होकर आता हूं। आदरणीय बलिहार सिंह जी ने हम और आप जैसे अनेक लोगों को ऊंगली पकड़कर उन्होंने राजनीति में लाया था। वह राजनीति में एक ऐसे विरले व्यक्ति थे कि आज के समय में बलिहार सिंह जी जैसा व्यक्ति मिलना बहुत मुश्किल है। हमने गांधी जी को नहीं देखा था, लेकिन राजनीति के गांधी आज के युग में श्री बलिहार सिंह जी जैसे लोग थे । अपने उसूलों के प्रति, अपने उसूलों से, सिद्धांतों से, विचारों से उन्होंने कभी कोई समझौता नहीं किया लेकिन दल में भी उतने ही लोकप्रिय थे और दूसरे दल के लोगों में भी उनकी उतनी ही मान्तया थी । माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे मालूम है कि आप भी समय-समय पर उनके साथ जाकर बैठते थे । आपके पिताश्री से उनकी गहरी मित्रता थी और प्रत्येक राजनीतिक दल का व्यक्ति उनको मानता था, उनसे आशीर्वाद लेने जाता था, उनसे मार्गदर्शन लेने जाता था । श्री बलिहार सिंह जी को हम अत्यंत विनम्रता से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी, पूर्व सांसद रायगढ़ । रायगढ़ राजघराने की अपनी एक विशेषता है । श्रीमती रजनीगंधा देवी जी को भी हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत-चीन सीमा पर जिस प्रकार की घटना हुई । चीन के सैनिकों ने घात लगाकर पीछे से हमारे सैनिकों पर जो हमला किया उसकी जितनी निंदा की जाये वह कम है । जो भी हमारे सैनिक वहां पर शहीद हुए और श्री गणेशराम कुंजाम जी जो हमारे छत्तीसगढ़ के शहीद हुए उनके श्रीचरणों को हम नमन् करते हैं, प्रणाम करते हैं । कोरोना वायरस में जिन लोगों ने भी समाज की सेवा में और इस विभीषिका के समय में जिन लोगों ने सेवा की है और सेवा करते-करते अपने प्राणों की आहूति दी है उनको हम नमन् करते हैं । नक्सलाईट मूवमेंट में जो हमारे जवान दिन-रात एक करके वहां पर लगे रहते हैं और नक्सली मुठभेड़ में हमारे जो भी जवान शहीद हुए हैं उनके सभी के प्रति हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं, उनके श्रीचरणों को नमन् करते हैं ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने छत्तीसगढ़ के कई महान विभूतियों को खोया है । माननीय स्वर्गीय अजीत जोगी जी, स्वर्गीय डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी, स्वर्गीय बलिहार सिंह जी, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी इन सभी को मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय जोगी जी आज हम लोगों के बीच में नहीं हैं लेकिन उन्होंने राजनीति में जो अपनी छाप छोड़ी है वह हमेशा हम लोगों के मानस पटल में रहेगी । जिस प्रकार से उन्होंने पेण्ड्रा-गौरेला के एक ग्रामीण क्षेत्र से निकल करके और राष्ट्रीय राजनीति में अपनी एक पहचान बनायी वहीं प्रशासनिक क्षेत्र में बड़े-बड़े पदों पर आसीन होकर उन्होंने अपनी एक पहचान बनायी वह हमेशा हम लोगों के मानस पटल पर रहेगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनीति में उनके साथ काम करने का मौका मिला। शुरूआती तौर पर हम उन्हीं के साथ राजनीति में सक्रिय हुए थे । मध्यप्रदेश के समय जब श्री अर्जुन सिंह जी मुख्यमंत्री थे । श्री राजीव जी ने जब उन्हें राजनीति में लाया था और तेंदूपत्ता नीति बनाने के लिये उनको जिम्मा दिया था तो उन्होंने छत्तीसगढ़ प्रदेश की पदयात्रा की थी और जगह-जगह जाकर के उन्होंने बैठक की थी और तेंदूपत्ता नीति बनाकर जो सहकारीकरण किया था वह उन्हीं की देन है और आज अगर आदिवासी अंचलों में, वन क्षेत्रों में लोगों को यदि लाभ मिल रहा है इसके लिये हम हमेशा उनको याद करेंगे और राजनीति में बहुत सारी बातें ऐसी रहती हैं जिसको हम लोग बोलने से परहेज करते हैं । जो बोलने का हम लोगों में नैतिक साहस नहीं रहता है लेकिन हम लोगों ने देखा है कि श्री जोगी जी कई ऐसी बातें भी लोगों के सामने बोल देते थे जो केवल उन्हीं की बातों में हमको देखने को मिलती थीं। जैसे अमीर धरती के गरीब लोग, ये बातें वर्ष 2000 में जब वे छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बने थे तो उस समय भी उन्होंने इन बातों का अपने भाषणों में समावेश किया था और वे अक्सर अपने भाषणों में बोलते थे कि गरीब को न सताईए, जाके मोटी हाय, मरे हुए चाम से लोह भस्म होई जाए । यह अक्सर उनके भाषण के अंश में रहता था और केवल यह संदेश देते थे कि गरीब को कभी राजनीति में, सार्वजनिक जीवन में नहीं सताना चाहिए । सदैव उनके आंसू पूछना चाहिए, उनकी मदद करनी चाहिए । हम लोग अपने जीवन में उनकी इस बात को हमेशा याद करेंगे । अध्यक्ष महोदय, 29 अप्रैल को उनका जन्म हुआ और मई में 29 तारीख को ही उनकी मृत्यु हुई, यह भी एक संयोग है । बहुत विषम परिस्थिति में भी माहौल को अपने पक्ष में मोड़ना और राजनीति में केन्द्र बिंदु बनना उनकी सहज आदत सी बन गई थी । मुझे बहुत सारे चुनावों में उनके साथ रहने का मौका मिला था । रायगढ़ का लोक सभा चुनाव हो, शहडोल का लोक सभा चुनाव जिसमें पराजय हुई थी, महासमुंद का लोक सभा चुनाव हो, उसमें भी साथ में काम करने का मौका मिला था, महासमुंद चुनाव लड़ते समय वे दुर्घटनाग्रस्त हुए थे इसके बावजूद भी मौत के मुंह से निकलकर वे फिर से उठ खड़े हुए थे । उनके अंदर विषम परिस्थिति में काम करने का जज्बा था । उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने लायक है । वे आज हमारे बीच नहीं हैं, हम उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और ईश्वर उनके परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे, ऐसी प्रार्थना करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मंत्रिमंडल में रहे । वे अनुसूचित जाति वर्ग से आते थे और उस वर्ग में उनकी गहरी पकड़ थी, राजनीति में अच्छी पैठ थी । उनके सानिध्य में भी काम करने का मौका मिला मैं उनके प्रति भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

स्वर्गीय बलिहार सिंह जी के बारे में जो कि जांजगीर-चांपा से विधायक रहे और अविभाजित मध्यप्रदेश में उन्होंने जेल और खाद्य मंत्री का प्रभार संभाला था । उनका जीवन बहुत सादगीपूर्ण था, वे बहुत ही सहज, सरल स्वभाव के थे । मैं उनके प्रति भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

श्रीमती रजनीगंधा देवी, जो कि रायगढ़ लोक सभा क्षेत्र से सांसद रहीं और जिस प्रकार से उन्होंने लोगों की सेवा की। वे सारंगढ राजपरिवार से राजा नरेश चन्द्र जी की बेटी थीं और चौथी लोक सभा के लिए वे चुनी गईं थीं । उन्होंने भी लोगों की खूब सेवा की । मैं उनके प्रति भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

भारत-चीन सीमा पर हुई हिंसक झड़प में शहीद हुए लोगों के प्रति भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं । जिस प्रकार से हमारे देश के जवान बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हुए उसके लिए मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । गणेश कुंजाम जी के साथ शहीद हुए जवानों के साथ नक्सली हमले में शहीद हुए जवानों के प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करते

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं । ओम शांति ।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय अजीत जोगी जी, जो कि इस प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री थी, हमारे बीच नहीं हैं । हम लोग बस्तर से और वे मरवाही से चुने जाते थे । जब वे मुख्यमंत्री थे उस समय मैं पहली बार विधायक बना था । उनके साथ मिलकर काम करने का मौका मिला । वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके पास प्रशासन का अनुभव, लोक सभा और राज्य सभा का अनुभव था इसके साथ ही हिंदुस्तान में पहले इतने पढ़े लिखे व्यक्ति होंगे । छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री बनने के बाद हम लोगों को उनके अनुभवों का लाभ मिला है । आज हमारे सदन के नेता और प्रतिपक्ष के नेता, सभी उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं। मैं भी उसमें दो शब्द बोलने के लिए खड़ा हूं । अध्यक्ष जी, बस्तर जिला सुदूर अंचल है, उस समय कोंटा विधान सभा था । वहां एक शबरी नदी है, जो उड़ीसा को जोड़ती है । आजादी के बाद उस पर एक भी पुल नहीं बना था । जब मैं उनके साथ हेलीकॉप्टर में बैठा था तो मैंने उनसे कहा तो उस समय कम संसाधन होने के बाद भी दो पुल बने । आज जब उस पर से गुजरता हूं तो अजीत जोगी जी की याद आती है । माननीय अध्यक्ष जी, तेंदूपत्ता की नीति अर्जुन सिंह जी के समय बनी थी, लेकिन आदिवासी लोगों द्वारा तेंदूपत्ता तोड़ने से उन्हें उतना लाभ नहीं मिलता था। मैंने अजीत जोगी जी को बोला था कि तेंदूपत्ता की नीति में परिवर्तन हो कि कच्चा पत्ती का टेंडर दिया जाये तो आदिवासी को लाभ होगा। हमारे सिर्फ सुकमा, दंतेवाड़ा, बीजापुर में वर्ष 2001 से 2002-03 तक यह नीति बदली थी। बाद में सरकार बदलने के बाद रमन सिंह साहब ने पूरे छत्तीसगढ़ में यह नीति लागू की। सुकमा से चालू होकर मध्यप्रदेश में भी वह नीति चालू हुई है। यह नीति की शुरूआत अजीत जोगी ने किया था। आज राज्य परिवहन बस के बारे में भी मैंने सुझाव दिया था कि राज्य परिवहन बस घाटे में चलता है। कभी टायर पंचर हो जाता है। इसका निजीकरण किया जाये। उस बात को गंभीरता लेते हुए अभी जो निजी लग्जरी बस चल रही है, वह अजीत जोगी के कारण है। यदि छोटा आदमी किसी भी बात को बोलता था तो अजीत जोगी जी की एक खूबी थी कि वे गंभीरता से सुनते थे। आज हमारे सदन के माननीय नेता बोल रहे थे कि शुरू में पैसा नहीं था। सूखा पड़ा था, लेकिन उस समय एक नीति बनाये थे कि हम ग्राम में डोबरा खोदना है। पूरी छत्तीसगढ़ की जनता ने उसे जोगी डोबरा का नाम रखा था। हर ग्राम में आज भी जोगी डोबरा के नाम से मिलेगा। ये अंतिम व्यक्ति के लिए लड़ने वाला का एक ही मंत्र था कि अभी अगर जनप्रतिनिधि सार्वजनिक जीवन में जीते हों तो अंतिम व्यक्ति को सताना नहीं है और गरीब व्यक्ति की मदद करनी है। वे ऐसा सुझाव देते थे। ज्यादा लोग बोलने वाले हैं कि वे ऐसे जनप्रतिनिधि हैं जिनकी हमेशा उनकी तबियत ठीक न होने के बाद भी और विलचेयर में बैठने के बाद भी छत्तीसगढ़ की राजनीति और हिन्दुस्तान की राजनीति लोक सभा से लेकर राज्य सभा, अधिकारी से लेकर जनप्रतिनिधि बनना बहुत आदमी का ऐसा स्वभाव नहीं होगा। मैं भगवान से विनती करूंगा कि उनकी आत्मा को अच्छी जगह दे और उसके परिवार को भी शांति प्रदान करे। इसके साथ ही साथ बाकी नेताओं को भी श्रद्धांजलि दूंगा। चीन बार्डर में हमारे बस्तर का एक आदिवासी लड़का गणेश कुंजाम उस लड़ाई में शामिल हुआ, उसे भी मैं श्रद्धांजलि देता हूं। अभी कोरोना के कारण पूरा हिन्दुस्तान और छत्तीसगढ़ जूझ रहा है और कुछ लोग उसमें भी शहीद हुए हैं, उन्हें भी मैं श्रद्धांजलि देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- श्री मनोज मंडावी जी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मनोज सिंह मंडावी (भानुप्रतापपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, जैसा कि आज आदरणीय श्री अजीत जोगी जी को, आदरणीय श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी को, आदरणीय श्री बलिहार सिंह जी को, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी को और भारत-चीन सीमा पर हिंसक झड़प में शहीद हुए साथियों को हम सब ने खासकर सदन के नेता ने, प्रतिपक्ष के नेता ने और माननीय सदस्यों ने श्रद्धासुमन अर्पित किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा सौभाग्य रहा है कि इस प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री आदरणीय अजीत जोगी जी के सानिध्य रहने का और शायद मैं यह सोचता हूं कि उनके साथ रहने में जितना लंबा समय मैंने बिताया है, शायद और साथी ने नहीं बिताया है। मैं छात्र जीवन से उनसे जुड़ा था। वर्ष 1986-87 में जब वे राजनीति में आये तो मैं उस समय कांकेर कॉलेज का प्रेसीडेंट था और सौभाग्य से हम लोग जितने भी युवा साथी थे, वे सब उनसे बहुत प्रभावित थे। हमारी इच्छा थी कि हमारा शपथ-ग्रहण उन्हीं के द्वारा हो। परन्तु जिस हिसाब से राजनीति चलता है, जिस हिसाब से लोग किसी को नीचे गिराने की कोशिश करते हैं, या एक प्रकार से कहिये, सब जानने के बाद भी अपराधी मानने की कोशिश करते हैं। इसाईकरण के नाम पर मेरे शपथग्रहण को रोका गया, अपने ही लोग रोके थे। परन्तु हमको जितना दूर करने की कोशिश की गई, हम उनसे जुड़ते गये। मैं कहीं न कहीं सोचता हूं कि केवल छत्तीसगढ़ माटी के प्रति समर्पण कहिये, या यह कहिये कि अमीर धरती के गरीब लोगों के प्रति एक संवेदना, एक सेवा भावना, समर्पण था। उनमें एक सोच थी कि छत्तीसगढ़ महतारी, यहां का मूल निवासी, चाहे यहां के आदिवासी हो, चाहे अनुसूचित जाति के हो, चाहे पिछड़े वर्ग के हो, उन तबके के लोगों को सामने लाना चाहते थे। मैं यह कहने में संकोच नहीं करता, जैसा भाई अमरीजीत भगत, भाई शिव डहरिया जी, भाई कवासी लखमा जी, मनोज मण्डावी जी, यह कहिये कि उनकी खोज हैं। यह कहिये कि उनकी एक सोच है। यह अलग बात है कि हम जिस परिस्थिति में हैं, जो भी परिस्थिति में हैं, परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि उनकी एक सोच थी, छत्तीसगढ़ के माटी के प्रति उनकी सेवा भावना थी, लोगों के प्रति उनकी एक संवेदना थी कि यहां के युवा साथी आये और इस माटी की सेवा करें। इस प्रदेश की सेवा करें, यहां की जनता की सेवा करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अजय भाई का भाषण सुन रहा था। भले आज जो भी जैसे भी है, परन्तु जिस स्थिति में इस प्रदेश का निर्माण हुआ था, आप सब जानते हैं, हम सब जानते हैं, उस समय की बजट स्थिति को भी जानते हैं, हमारे मंत्रिमण्डल के बहुत से साथी आदरणीय सी.एम.साहब भी हैं, गृह मंत्री जी हैं, परिवहन मंत्री जी भी हैं, हमारे बहुत से साथी हैं, बहुत कम बजट में भी हम लोग दौड़-दौड़कर काम करते थे। उनकी क्या मंशा थी, मैं नहीं जानता। पर मैं उनके काम के प्रति एक ही मंशा, सेवा भावना देखा। जितना हो सके, जैसा हो सके काम हो। मैं इमान कह सकता हूं कि 2000 में जितने पुल-पुलिया, सड़कें मेरे क्षेत्र में, अन्य क्षेत्र में बना है या नहीं बना है, मैं नहीं जानता, शायद आज तक, मैं पूर्व सरकार से भी क्षमा चाहूंगा, आज तक इतना पुल-पुलि या और सड़कें नहीं बनी हैं। मतभेद था, मनभेद नहीं था। यह कहिये कि छत्तीसगढ़ महतारी के प्रति, छत्तीसगढ़ की जनता के प्रति जो समर्पण था, उस समय के जनप्रतिनिधियों में था, मैं उसको भी भुला नहीं सकता। उस नेतृत्वकर्ता में ऐसी सक्षमता थी। या यह कहिये कि उनके गुण थे, उनकी विशेषता थी, उनकी एक सोच थी कि अपने लोगों के प्रति समर्पित हो, अपने लोगों के प्रति सेवा करना था। शायद इन्हीं कारणों से हम सब एकजुट थे। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं उनके बारे में जितना कुछ कहना चाहूं, बहुत कम कह सकता हूं। इसलिए कि सभी साथियों ने उनको अच्छे मन से, अच्छे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

शब्दों से उनको श्रद्धांजलि अर्पित की है, तो मैं भी उनके साथ हूं। मैं ऐसे व्यक्तित्व को नमन करता रहूंगा, करता रहूंगा और करता ही रहूंगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां तक गणेश कुंजाम जी, जो भारत-चीन सीमा के बीच जो हिंसक झड़प हुई, जिसमें उनकी शहादत हुई, वह सौभाग्य से मेरे विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत कुरूघाट पंचायत के गिरधाली गांव से हैं। वह बहुत गरीब परिवार से थे। जो भी परिवार हो, जैसा भी परिवार हो पर उन्होंने हम सबके लिए अपने जान की कुर्बानी दी है। मैं उनको भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, जितनी भी मृत आत्माएं हम सबको छोड़कर चली गई हैं, मैं उन्हें फिर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले हमेशा जब हम प्रवेश करते थे तो गेट के पास ही उनसे हमारी मुलाकात होती थी, आज हमने जब इस सदन में प्रवेश किया तो आज उनसे मुलाकात नहीं हुई। भाभी जी यहां पर उपस्थित हैं। एक अजातशत्रु, एक स्वप्नदृष्टा, एक जीजीविशा के धनी, हमारे उनसे बहुत मतभेद थे। शायद हमने उनके बारे में जितने कटुपूर्ण शब्द इस सदन में कहे होंगे, बाहर कहे होंगे वह कल्पना से बाहर हैं कि ऐसे कटुतापूर्ण शब्द भी कहे जा सकते हैं। परंतु उनकी तारीफ भी कि आज जो छत्तीसगढ़ यदि दिखाई देता है, जो छत्तीसगढ़ की नीव उन्होंने रखी उस नीव पर आज ये ध्रुव तारा चमकता हुआ पूरे देश में दिखाई देता है वह नीव रखने वाले अगर कोई थे तो वह अजीत जोगी जी थे। यहां पर भाई मोहम्मद अकबर जी बैठे हैं, रविन्द्र चौबे जी बैठे हैं, हम लोगों के संबंध तो कालेज के जमाने से, शायद 45 साल पहले, मतलब एक ऐसा एडमिनिस्ट्रेटर क्योंकि उस जमाने में अगर सबसे बड़े कोई आंदोलन होते थे तो छात्रों के आंदोलन होते थे, विश्वविद्यालयों के आंदोलन होते थे। वह छात्र नेताओं को बुला-बुलाकर उन सबको काम में लगा दिये कि जीप का फाईनेंस करा लो, टैक्सी का फाईनेंस करा लो, ट्रक का फाईनेंस करवा लो, गिट्टी की खदानें ले लो और बोले कि तुम लोगों पर पुलिस के केस बनेंगे, तुम्हारा जीवन बर्बाद हो जायेगा, काम धंधे में लगो, तुम्हारा परिवार भी खुश होगा, तो उनकी ऐसी सोच थी। एक ऐसा एडमिनिस्ट्रेटर, आई.ए.एस., आई.पी.एस., इंजीनियरिंग कालेज में लेक्चरर। मुझे याद है कि जब हम देवभोग के हीरा खदान की लड़ाई लड़ रहे थे, उस समय कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने हमारा समर्थन किया कि हॉ, छत्तीसगढ़ की हीरा खदानें विदेशी कंपनियों को नहीं लूटने देना चाहिए। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसको लगता था कि अगर छत्तीसगढ़ का हित नहीं है तो ऐसा काम नहीं होना चाहिए और ऐसे व्यक्तित्व के प्रति हम सब श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। उनको हम कभी भूल नहीं सकते। मैं तो जोगी परिवार के लिए कहना चाहूंगा कि आपको गर्व करना चाहिए कि वह आपके पति थे, बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे, छत्तीसगढ़ के स्वप्नदृष्टा थे, छत्तीसगढ़ की आधारशिला रखने वाले थे और आज यहां पर बैठे हुए बहुत से सदस्य हैं जिन्होंने उनकी उंगली पकड़कर राजनीति सीखी है। क्योंकि जब कोई व्यक्ति हमारे बीच से चला जाता है तब हम उनकी अच्छाईयों की चर्चा करते हैं और उसी की चर्चा करनी चाहिए जिससे हमको कुछ सीख मिल सकती है। हम उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। भाभी जी, अमित जोगी जी, उनका परिवार मुझे लगता है कि जिन्होंने व्हील चेयर पर चलने के बाद भी इतने लंबे समय तक अदम्य साहब के साथ यदि उन्होंने काम किया तो शायद यह भाभी जी और उनके परिवार का साथ था और उनका विल पॉवर था जिसके कारण इतने लंबे समय तक वह हमारे बीच रह पाये। हम ये सोचते नहीं थे कि वह इतनी जल्दी हमारे बीच से चले जायेंगे। अचानक वह हमारे बीच से चले गये और इसलिए शायद हम

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सबको इसका दुख भी है, कष्ट भी है, शॉक भी है कि एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी जिसने छत्तीसगढ़ को पूरे देश में नाम दी, पहचान दी ऐसा व्यक्तित्व आज हमारे बीच नहीं है। हम उनके प्रति अपना श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी के साथ हमको मध्यप्रदेश में भी और छत्तीसगढ़ में भी काम करने का अवसर मिला। वह अनुसूचित जाति के एक बहुत बड़े नेता थे और उन्होंने उनके लिए बहुत काम किया। हम उनके लिए भी श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, श्री बलिहार सिंह जी। उनके बारे में, शायद उस प्रजाति के लोग अब हमको कभी नहीं मिल सकते। मध्यप्रदेश में उनके साथ मंत्री के रूप में साथ में काम करने का अवसर मिला।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी जो सांसद रही हैं इन सब के प्रति हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं इनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति मिले और उनके जो अच्छे गुण थे, उन गुणों को हम अपनाकर छत्तीसगढ़ का नाम रौशन कर सकें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, साथ ही भारत और चीन की सीमा पर देश की रक्षा, हमारी रक्षा के लिए जो हमारे जवान शहीद हुए हैं, उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ और विशेष रूप से गणेश कुंजाम जो हमारे छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के वनवासी बंधु परिवार से थे और उन्होंने हमारा नाम देश के लिए रोशन किया। उन सब के प्रति हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी, नेता प्रतिपक्ष जी, विधान सभा अध्यक्ष जी और सभी सदस्यों ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं उसके प्रति हम सहमति व्यक्त करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- श्री शैलेश पाण्डे संक्षिप्त में अपनी बात रखें।

श्री शैलेश पाण्डे (बिलासपुर):- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आपको प्रजातंत्र का सम्मान बढ़ाने और हम सब को सुरक्षित रखने के लिए जो आपने कोरोनाकाल में ये व्यवस्था बनायी है, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम सब लोग माननीय अजीत जोगी जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। माननीय जोगी जी का बिलासपुर से बहुत गहरा नाता था। चूंकि मैं बिलासपुर का विधायक हूँ इस नाते बिलासपुर की जनता, बिलासपुर के जिले के लोग विशेषकर पेण्ड्रा, गौरेला, मरवाही के जो लोग हैं वह अजीत जोगी जी से बहुत जुड़े रहे और मैं भी लगभग मैडम जोगी के क्षेत्र में 14-15 वर्ष नौकरी किया। इस कारण भी एक विशेष लगाव रहा और उनसे कुछ सीखने को मिला। माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है कि जब वे मुख्यमंत्री थे हमारे नेता, आज हमारे मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी उस वक्त राजस्व मंत्री हुआ करते थे मैं एक प्राईवेट नौकरी करता था और उस वक्त पाटन जिले में एक कार्यक्रम हुआ था। पाटन क्षेत्र में एक कार्यक्रम हुआ था। वे एक विज़नरी व्यक्ति थे कि उन्होंने उस समय इस प्रदेश में खसरा, बी-वन, नक्शा ऑनलाईन मिले, डेटा का डिजिटाईजेशन किया जाए, इसको लेकर उन्होंने इसरो, बैंगलोर और महाराष्ट्र के बहुत सारे शहरों में अधिकारियों को अध्ययन करने के लिए भेजा। मुझे याद है कि मैं वहां पर एक प्राईवेट नौकरी करता था, उस भुईंया कार्यक्रम से जुड़ा हुआ था। उस भुईंया कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने शुरूआत की छत्तीसगढ़ में खसरा, बी-वन, नक्शा ऑनलाईन दिया जा सके। आज लगभग 18-20 साल होने को आ रहे हैं और इसमें आज हमारे प्रदेश में हर व्यक्ति को जो खसरा, बी-वन, नक्शा ऑनलाईन मिल रहा है ये माननीय अजीत जोगी जी का जो उद्देश्य, विजन था, उसके कारण संभव हो सका। दूसरी एक और बात

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कहना चाहूंगा कि क्योंकि मैं उससे भी जुड़ा हुआ था । चूंकि पूरे देश में विश्वविद्यालयों की बहुत कमी थी और शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर को ग्रॉस इनरोलमेंट रेश्यों बढ़ सके, इसको लेकर वे बेहद चिंतित थे और छत्तीसगढ़ शिक्षा को लेकर एक अग्रणी राज्यों में आये, इसके लिए उन्होंने बहुत प्रयास किया और उच्च शिक्षा को निजीकरण किया । उनकी जो सोच थी, उसको लेकर हम आगे बढ़ेंगे। मैं समझता हूँ कि भारत देश में पहला ऐसा राज्य छत्तीसगढ़ था जब कांग्रेस की सरकार थी और उस वक्त जोगी जी मुख्यमंत्री थे तब यहां पर उन्होंने उच्च शिक्षा में निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना के लिए अनुमति प्रदान की और उसके बाद हमारे आदरणीय चन्द्राकर जी ने कहा है कि उसको उन्होंने आगे बढ़ाया, दूसरे रूप में उसी चीज को आगे बढ़ाया और आज पूरे देश में निजी विश्वविद्यालय अच्छा काम कर रही हैं और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के साथ देश और प्रदेश की सेवा कर रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि मेरा उनसे व्यक्तिगत संपर्क था। इस सदन में वे सदस्य थे। मैं एक नया-नया व्यक्ति हूँ। अभी मुझे डेढ़ साल ही हुआ है और इस सदन का सदस्य हूँ। जब इस सदन में माननीय अजीत जोगी जी बोलते थे, जब हम सब को संबोधित करते थे, किसी विषय पर अपनी बात रखते थे तो हम सभी लोग उसको बहुत अच्छे और ध्यान से सुनते थे। मैं भी एक नया लड़का हूँ और पहली बार विधायक बना हूँ और बहुत लम्बा राजनीतिक जीवन नहीं रहा है। जीवन भर राजनेताओं को सुनने, पढ़ने, टी.वी. में देखने, उनको अखबार में पढ़ने से ही इतना संतुष्ट हो जाता था, विधायक बनने के बाद मैं इतने निकट से इतने बड़े-बड़े नेताओं को यहां पर सुनता हूं, उनसे सीखता हूं और मार्गदर्शन प्राप्त करता हूं। हमारे जोगी जी बहुत ही अच्छे स्वप्नदृष्टा, कुशल प्रशासक थे, आई.ए.एस. आई.पी.एस. भी रहे, सांसद, विधायक रहे। मैं समझता हूं कि एक जीवनकाल में कोई भी व्यक्ति इतना नहीं कर सकता है जितना वह कर सकते थे जो उन्होंने करके दिखाया। जब उनका एक्सीडेंट हो गया था, उसके बाद भी उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति से अपने जीवन में जो काम किया, यह सामान्य बात नहीं थी। मैं समझता हूं कि वह पूर्व जन्म में कोई बहुत बड़ी पुण्यात्मा जरूर रहे होगें इसलिए उन्होंने इस जन्म में इतने सारे काम किये। मैं उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री स्वर्गीय अजीत जोगी जी आज हमारे बीच नहीं हैं। छत्तीसगढ़ के लोगों को न केवल संपने दिखाने वाले बल्कि जिनके लिए "सपनों का सौदागर" कहा जाता था, उनका हमारे बीच से चले जाना निश्चित रूप से न केवल छत्तीसगढ़ के लिए, पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। पेण्ड्रा में जन्म लेकर एक छोटे से गांव से निकलकर इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई करने के बाद, इंजीनियरिंग कॉलेज रायपुर में सेवा देने के बाद आई.पी.एस., आई.ए.एस. की परीक्षा पास करना और यह भी साबित करना कि छत्तीसगढ के गांव से, उस मूल अंचल से निकलकर अपनी प्रतिभा को बार-बार प्रदर्शित करना और सफलता के नये आयाम छूना जिलाधीश के सर्वाधिक लंबे कार्यकाल के रूप में कीर्तिमान स्थापित किया। उसके साथ ही वह 1986 से लेकर 1998 तक राज्यसभा के सदस्य रहे, 1998 में रायगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य चुने गये। वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ और तब उन्होंने मुख्यमंत्री के दायित्व को संभाला और 3 साल तक मुख्यमंत्री के रूप में काम किया। इस देश की राजनीति में, सामाजिक क्षेत्र में एक सफल आई.ए.एस., आई.पी.एस., प्रशासनिक अधिकारी के साथ-साथ एक मुख्यमंत्री के रूप में अलग-अलग भूमिकाओं में पूरे देश में ऐसा विरला व्यक्ति मिलना मुश्किल है, उन्होंने सारी प्रतिभाओं को दिखाया और अंतिम समय तक छत्तीसगढ़ की सेवा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करते रहे। वह संघर्ष के प्रतीक थे। यह उनकी जीवटता थी कि व्हीलचेयर पर बैठकर कोई व्यक्ति राजनीतिक दल का निर्माण कर सकता है और पूरे छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में यात्रा कर सकता है, यह अजीत जोगी के सिवाय कोई दूसरा व्यक्ति नहीं कर सकता, यह जीवटता सिर्फ उनके अंदर थी और उन्होंने किया और नये राजनीतिक दल का निर्माण किया। उनके अदंर जिद, जिजीविषा, जीवटता और जीवंतता थी, ये चार गुण यदि किसी व्यक्ति में ढूंढें जायें, उस व्यक्ति का नाम अजीत जोगी ही हो सकता है, दूसरा नहीं हो सकता। अध्यक्ष महोदय, जब वह बोलते थे और जब वह अपनी बात धाराप्रवाह छत्तीसगढ़ी में कहते थे और अधिकांश समय वह छत्तीसगढ़ी में बात करते थे, तो सम्मोहन की ताकत किसी व्यक्ति के भाषण में हो सकती है तो वह अजीत जोगी जी के भाषण को सुनने के बाद ही लगता था कि ये उनके अंदर की ताकत थी। चुनौती देना उनका स्वभाव था, जूझना उनकी फितरत थी। उनमें ये ऐसे अद्भुत गुण थे कि वह चुनौती देते थे, चुनौती स्वीकार करते थे और जूझने की ताकत उनके अंदर थी। निश्चित रूप से उनके कार्यकाल को, उनकी सोच को, छत्तीसगढ़ के बारे में उनके समर्पण भाव को हम हमेशा याद करते रहेंगे। उनके बारे में अटल जी की एक पंक्ति याद कर रहा हूं जो उनके लिए बहुत उपयुक्त लगती है-

जी भर के जिया हूं, मौत से क्यों डरूं,

लौटकर फिर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं?

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अटल जी की पंक्ति उनके लिए उपयुक्त है। आज मैं उन्हें श्रद्धापूर्वक अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर उनके परिवार को इस कष्ट को सहने की शक्ति दे।

श्री डी.पी. धृतलहरे जी माननीय पूर्व मंत्री रहे और चूंकि नवागढ़ और कवर्धा मिला हुआ है । मेरे पड़ौसी के नाते उनसे मेरे बहुत अच्छे संबंध थे । अखिल भारतीय सतनामी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे, सरपंच की हैसियत से झुलना से उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की और जमीन से कितने जुड़े थे यह एक ही घटना से साबित हो सकता है । मैं एक ही बात बताउंगा कि वे लगातार दो बार निर्दलीय चुनाव जीतते रहे । मध्यप्रदेश में मंत्री रहे, छत्तीसगढ़ में मंत्री रहे । निश्चित रूप से उनका संघर्षपूर्ण जीवन रहा, मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलिहार दादा को राजनीति में निश्चित रूप से अब छत्तीसगढ़ में या देश में बलिहार दादा की सादगी, उनकी निश्छलता, उनकी सरलता और जिस रूप में वे 94 सालों तक सक्रिय थे । आखिरी तक पार्टी की बैठकों में जाना, मंडल की बैठक में जाना, प्रदेश की बैठक में जाना, जहां उनको आमंत्रित कर दें । श्री बलिहार दादा अपने साधन से आ जायें और इतने अद्भूत राजनीतिज्ञ को मैंने नहीं देखा, मैं उन्हें भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्रीमती रजनीगंधा देवी जी जो सारंगढ़ के राजा नरेशचंद्र जी की बेटी थीं उन्हें भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । भारत-चीन सीमा पर हमारे वीर जवानों ने जो शहादत दिखायी और चीन की सेना को खदेड़ने का काम किया उन शहीदों को मैं सलाम करता हूं । मैं छत्तीसगढ़ माटी के सपूत श्री गणेशराम कुंजाम जी के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । इसके साथ ही कोरोना के इस पूरे कार्यकाल में जितने लोगों ने इस कोराना से लड़ते हुए न केवल डाक्टर बल्कि पैरामेडिकल स्टॉफ और बाकी लोगों ने भी अपनी शहादत दी । कोरोना में जो लोग नहीं रहे, मैं उन सभी के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । नक्सल हिंसा में जो हमारे जवान शहीद हुए उन्हें भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । धन्यवाद ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पंचायत मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं श्रद्धेय अजीत जोगी जी के स्मरण में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए खड़ा हुआ हूं । एक युवा जो भोपाल के ही एम.ए.सिटी कॉलेज के गोल्ड मेडलिस्ट छात्र के रूप में उभरा । वह अनारक्षित वर्ग में लेक्चरर भी बने, आई.पी.एस. के अधिकारी भी बने, आई.ए.एस. के अधिकारी भी बने, कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी भी बने, जनप्रतिनिधि भी बने, सांसद भी बने, विधायक भी बने, मुख्यमंत्री भी बने । अंतिम अपने जनप्रतिनिधित्व के कार्यकाल में जोगी कांग्रेस के विधायक के रूप में भी सदन में उपस्थित हुए । आई.ए.एस. की सेवा में मेरे पिता जी के साथ वह एक आई.ए.एस. के अधिकारी रहे और उस समय से नजदीकी पारिवारिक संबंध रहे । विशेषकर इंदौर की बातें घर के लोग बताते थे, मैं तो बाहर बोर्डिंग में पढ़ता था । क्रिकेट मैच हों तो उनके घर में ही जाकर परिवार के लोग रूका करते थे ऐसे संबंध हम लोग सुनते रहे। पिता जी जब भी आना-जाना करते थे, श्री जोगी जी से मिलना-जुलना होता था, स्टेशनों में मिलना-जुलना होता था । पदयात्रा के दरम्यान मैंने राजनीतिक स्वरूप में दो कदम उनके साथ चलने का अवसर पाया और छत्तीसगढ़ का जब गठन हुआ तो हमारी पार्टी के प्रतिनिधियों ने, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जिस पहल की अगुवाई में अहम भूमिका अदा की थी । आदिवासी एक्सप्रेस के रूप में हम लोगों ने पहल की, सब साथी जो विधायक थे, साथ जुटे और पार्टी की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया जी ने श्रद्धेय जोगी जी को छत्तीसगढ़ के पहले मुख्यमंत्री के रूप में जिम्मेदारी सौंपी । उतार-चढ़ाव के संबंधों में मैं भी जैसा कि श्री धर्मजीत भाई कह रहे थे वही बात दोहराउंगा कि कोई भी परिस्थिति रहे, जब भी उनसे मुलाकात हो । सदन में आना-जाना एक अवसर ऐसा नहीं रहा कि उन्होंने हाथ बढ़ाकर यह न कहा हो कि टी.एस. कैसे हो । उम्र में बड़े, पद में बड़े, कद में बड़े हर मायने में मेरे से बड़े लेकिन एक भी अवसर ऐसा नहीं था कि हम लोग गुजरे हों, आमने-सामने से गये हों और उन्होंने इस प्रकार का आचरण न किया हो । मैं अंत में उन्हीं बातों को समरण करूंगा कि कुछ संयोग ऐसा रहा कि पिता जी का देहांत हुआ तो उस समय मैं उनसे ही मिलने चूंकि मेरी माता जी भी भोपाल से आ रहीं थीं, मैं भी अंबिकापुर से आया । उनसे मिलने के लिये ही अगले दिन आये थे और रात को ही पता चला कि पिता जी नहीं रहे । माता जी का देहांत अभी 10 फरवरी को हुआ, किन कठिनाइयों को सहकर श्रद्धेय जोगी जी अंबिकापुर तक आए, इतनी खराब रास्तों से होकर, उनकी तबियत भी बिगड़ी लेकिन श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उस जीवट आत्मा में वह मनोबल था कि स्टेज पर आकर तीन बार तबियत खराब होने के बाद भी उन्होंने कहा कि मैं जाउंगा ही और मैं अपनी श्रद्धांजलि मन से अर्पित करूंगा ही । आज उनको स्मरण करते हुए मैं भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । साथ ही डी.पी.धृतलहरे जी को, सम्माननीय बलिहार जी को, रजनीगंधा जी को, एल.ए.सी. पर शहीद हमारे जवानों को जिसमें हमारे कांकेर का जवान भी शामिल है । नक्सली हिंसा में शहीद जवान और कोरोना वारियर्स सभी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । आपने अवसर दिया, धन्यवाद् ।

परिवहन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री आदरणीय अजीत जोगी आज हमारे बीच नहीं हैं । लेकिन हम लोगों ने उनके साथ मिलकर काम किया, मुझे कुछ बातें आज भी याद है । मैंने उनके मंत्रिमडल में उनके साथ काम किया है । मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूं कि मैं उनके बहुत ही करीबियों में से एक था । मुझे उसने सीखने का बहुत अवसर मिला क्योंकि उस समय मेरा विभाग अटैच-टू-सी.एम. था । लेकिन मेरी पहली मुलाकात बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में हुई थी । उस समय वे रायपुर के कलेक्टर थे और मैं दुर्गा महाविद्यालय के छात्रसंघ का अध्यक्ष था । किसी बात को लेकर, अपनी मांगों को लेकर हम

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लोग उनका घेराव करने गए थे । दो-तीन सौ छात्र थे, लेकिन वहां जाने के बाद उन्होंने जिस अंदाज़ से पूरे मामले को हैंडल किया । उन्होंने हमारी बातों को सुना और हमको समझाया । उसके बाद से लगातार आना-जाना होता रहा । जब तक वे रायपुर के कलेक्टर रहे, हम लोग लगातार उनके सम्पर्क में बने रहे । उन्होंने सात-साढे सात हजार करोड़ के बजट में पूरी सरकार को चलाया । दो-तीन बातों को मैं यहां बताना चाहूंगा । वे अपने आप को सपनों का सौदागर तो कहते ही थे । इसी विधान सभा के रिकॉर्ड में यह बात है । उन्होंने इस विधान सभा में यह कहा था कि जब में गरीबों के लिए कुछ कड़े फैसले लेता हूं तो लोग मुझे तानाशाह कहते हैं, तो हां मैं तानाशाह हूं । यह बात विधान सभा के रिकॉर्ड में आज भी है । एक दो बातें जो प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर है, वे कितनी कड़ाई से फैसले लेते थे। एक मामला आया था कि स्कूल बस्ते में मुख्यमंत्री का चित्र छपाओ । अजीत जोगी जी ने कहा था कि सारे स्कूल के बस्तों में मेरा फोटो लगाओ । मेरे सामने की बात है कि एक अधिकारी ने कहा कि सर, ऐसा कोई नियम नहीं है । उन्होंने पलटकर कहा था कि नियम कौन बनाता है । नियम हम बनाते हैं, आप तो छपवाना शुरू करो और बाद में प्रस्ताव लाओ और नियम बनाओ । उनकी कार्यशैली इस प्रकार की थी । अध्यक्ष महोदय, अन्य सदस्य भी इस विषय में बोलना चाहते हैं मैं एक और घटना बताना चाहूंगा । उनके काम कराने के प्रशासनिक अंदाज का एक और उदाहरण देना चाहूंगा । उस समय मैं रायपुर जिले का प्रभारी मंत्री था, अमिताभ जैन साहब यहां बैठे हैं वे रायपुर कलेक्टर थे । कुछ व्यापारियों के द्वारा विधान सभा का घेराव हुआ था । व्यापारी अपनी मांगों को लेकर विधान सभा का घेराव करने आए थे। उनकी गिरफ्तारी हुई थी । सारे लोग गिरफ्तार कर लिए गए थे । उस समय विधान सभा का सत्र चल रहा था । अगले दिन अमिताभ जैन साहब जेल के पास थे, उन्होंने मुझे सूचना दी । उस समय मोबाइल नया-नया प्रारंभ हुआ था । उन्होंने बताया कि व्यापारियों के समर्थन में विद्याचरण जी गिरफ्तारी देने आ रहे हैं । उनके साथ कुछ लोग और हैं, क्या करें ? मैंने कहा कि जब वे पहुंच जाएं तो आप फोन करिये । वापस आने के बाद जब उन्होंने सूचना दी तो मैंने कहा कि यदि गिरफ्तारी देना चाहते हैं तो बाकी लोगों के बारे में तो मैं कह सकता हूं कि उन्हें गिरफ्तार कर लो, लेकिन मैं विद्याचरण जी बड़े नेता हैं, उनके बारे में मैं नहीं कह सकता। उनके बारे में तो मुख्यमंत्री जी को ही फैसला लेना है, लेकिन आने दो। थोड़ी देर के बाद फिर अमिताभ जैन जी का फोन आया कि विद्याचरण जी आ गये हैं और गिरफ्तारी देना चाहते हैं। तब मैं विधान सभा के भीतर आया। जोगी जी यहीं बैठे हुए थे। मैंने एक पर्ची में लिखा कि विद्याचरण जी गिरफ्तारी देना चाहते हैं, क्या करें ? मार्शल के जरिए उन्हें पर्ची दी गई। उन्होंने उस पर्ची को उठाकर ऐसे देखा और मेरी तरफ ऐसा देखकर पेन खींचा और लिखा यस ए.पी.के. बाकायदा दस्तख्वत के साथ। इस तरीके से जो उनका काम करने का अंदाज था और जो हिम्मत थी, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। मैं आज उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परिवार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे। इसके साथ ही श्री डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी, पूर्व मंत्री श्री बलिहार सिंह जी, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी और भारत चीन सीमा पर हुई हिंसक झड़प में शहीद जवानों को भी अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती रेणु अजीत जोगी जी।

डॉ. (श्रीमती) रेणु अजीत जोगी (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस श्रद्धांजलि सभा में मैं यहां पर उपस्थित सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देना चाहती हूं कि आपने जोगी जी के सम्मान में इतने अच्छे शब्दों का

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रयोग किया। अच्छे संस्मरणों को याद किया और मैं यहां यह भी कहना चाहती हूं कि समय काफी हो गया है, इसलिए मैं दो लाइन में अपनी बात समाप्त करूंगी। लगभग 40 वर्ष के दाम्पत्य जीवन को एक लाइन में कहना चाहूंगी, जो आप सब लोगों ने भी कहा कि सच में ये सपने के सौदागर थे। वे रात में सपने नहीं देखते थे। वे दिन में सपने देखते थे। उन्हें बुनते थे और सच करने के उपाय सोचते रहते थे। जब राज्य बना तो इस विधान सभा में आप लोगों ने उनके कई उदाहरण पेश किये। मैं मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगी कि इनका अंतिम सपना गौरेला-पेण्ड्रा और मरवाही जो इनका गृह ग्राम है, उसे जिला बना दिया जाये तो 10 फरवरी को वह शुभ दिन आया और बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में वह कार्य सम्पन्न हुआ। जो अंतिम सार्वजनिक कार्यक्रम कोरोना काल के पहले हुआ है। गुरू दक्षिणा देने के लिए आपको धन्यवाद। मैं एक बात और कहना चाहूंगी कि कोरोना काल में सबको अड़चन हुई होगी, पर इन्होंने इसका सदुपयोग किया। 2 घंटे सुबह और 2 घंटे शाम। डिक्टेशन देकर एक आत्मकथा पूरी की। मैं भी इनके कमरे में बार-बार जाना चाहती थी तो वे कहते थे कि मुझे डिस्टर्ब मत करो। रात में जब मैं डिनर लूंगा तब आया करो। यह घटना 9 मई की थी। 8 मई की रात को मैं करीब 11 बजे तक उनके साथ थी। मैंने पूछा कि क्या आपकी आत्मकथा पूरी हो गई है? उन्होंने कहा कि 3 दिन पहले 5 मई को मैंने उसे पूरा कर लिया है। वे काफी संतुष्ट और खुश थे । उन्होंने कहा कि मैं उसमें और कुछ-कुछ सम्मिलित (add) किया है, तुम उसको देख लेना कि उसको कहां लगाना है। मैंने कहा कि क्या आपने नाम भी सोचा है ? तो बोले कि मैंने कई लोगों से राय मांगी है, अभी फायनल नहीं किया है। मुझे इस सदन ने, जो मेरा आंकलन भी था, कि ये सपनों के सौदागर थे। आप, कई लोगों ने इस बात का जिक्र किया, मुझे मदद भी मिली। मैं अभी आत्मकथा संकलित कर रही हूं, उसका नाम वही रखूंगी " सपनों के सौदागर"।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उसका एक लाईन भी बताना चाहूंगी। क्योंकि मेरी जब शादी हुई, तब ये सीधी जिले में कलेक्टर थे। उसके बाद का जीवन तो over all काफी सुखद रहा। परन्तु जब मैं इनके बचपन के बारे में पढ़ रही थी, तो ये 8 भाई-बहन थे। माता-पिता शिक्षक थे, घर में काफी शोर-शराबा होता था। पढ़ने का टाईम नहीं मिलता था। अंत में इनके पिता जी ने एक छोटा सा कमरा दिया, वह कमरा अभी भी सामने है, उनको एक गंदी फटी पैबंद लगी मच्छरदानी देकर अलग सुलाया कि तुम यहां रहो। सुबह 3 बजे उठकर पढ़ाई किया करते थे। उनकी एक और लाईन याद आ रही है। जब उनका आई.पी.एस. में चयन हुआ, तो इन्होंने भोपाल में एम.ए.सी.टी. की परीक्षा के बाद, भोपाल की संस्कृति से प्रभावित होकर आई.पी.एस. की परीक्षा दी थी। परन्तु उनको यकीन नहीं था कि उत्तीर्ण हो जायेंगे। क्योंकि अंग्रेजी अच्छी नहीं थी, तैयारी अच्छी नहीं थी। उस समय वे आम के पेड़ के ऊपर चढ़कर चूसनी आम खा रहे थे। लोग इनको ढूंढते हुए दौड़ते-दौड़ते एक छोटा सा मिठाई का डिब्बा लेकर आये कि तुम्हार चयन हो गया है। तो वे उस हाल से उठकर जो संघर्ष किया, तो मैं इसी दुविधा में थी कि क्या इसका नाम सफरनामा रखूं, संघर्षनामा रखूं, संघर्षयात्रा रखूं, पर आपने मदद की। आपको इसके लिए धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रीक देश में मान्यता है कि जब हंस अपनी मृत्यु के पहले गाना गाता है, तो वह सबसे मधुर गाना होता है, जिसको विदेशों में "स्वान सांग" या "हंसगीत" कहते हैं। अब पता नहीं कि इन्होंने जो लिखा है, अभी मैंने इसे पूरा नहीं किया है। मैं आशा करती हूं कि इनके जीवन के लेखन की पराकाष्ठा हो। उन्होंने उसमें शुरू में ही लिखा है कि मैं सच लिखने का प्रयास कर रहा हूं। मैं भी कोशिश करूंगी कि उन्होंने जो लिखा है, उसे यथावत आप सबके सामने may be एकाध महीना और लग जायेगा, पेश करूं। अध्यक्ष महोदय, अंतिम बात,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हम लोगों का 20 साल इन्दौर में बीता और ये वहीं से राजनीति में आये। इनका विशेष रूप से आदेश था कि तुम राजनीति में बिलकुल दिलचस्पी नहीं लोगी। उन्होंने वर्ष 1991 में छत्तीसगढ़ में जगदलपुर से रतनपुर की पदयात्रा तय की, तब मैंने उनसे कहा कि आप 20 साल से तो इन्दौर में हैं, आपको अचानक से क्या सूझा कि छत्तीसगढ़ में पदयात्रा कर रहे हो और वह भी 30 दिन की कर रहे हो। मार्च का महीना था। बाद में पैरों में छाले हो गये थे। तो बोले कि नहीं, वह मेरी जन्मभूमि है, छत्तीसगढ़ से मुझे बहुत लगाव है। तब तो मध्यप्रदेश का विभाजन भी नहीं हुआ था और न कोई सपने में सोच रहा था कि मध्यप्रदेश का ऐसा विभाजन होगा। परन्तु शुरू से ही छत्तीसगढ़ के प्रति, यहां के लोगों के प्रति शायद, यहां के लोग आर्थिक रूप से कमजोर थे, यहां की गरीबी भी बहुत बारीकी से देखी थी। इनका झुकाव छत्तीसगढ़ के प्रति रहा है।

अध्यक्ष महोदय, हमारे अन्य दिवंगत नेता श्री बलिहार सिंह जी, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी, श्री गणेश कुंजाम जी, कोरोना वारियर्स, श्री डी.पी.धृतलहरे जी को भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का पर्याप्त समय दिया, धन्यवाद।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जिस विधानसभा में बैठकर हम लोग आदरणीय जोगी जी को स्मरण कर रहे हैं, जब नई राजधानी बनी तो इसको विधानसभा बनाने के लिए सबसे पहले जोगी जी को लेकर हम ही लोग आये। उस समय भी विधि विधायी, संसदीय कार्य और सारे विभाग उन्होंने मुझे दे रखा था। राज्य का जब विभाजन हुआ तो नोडल विभाग के रूप में चूंकि मध्यप्रदेश में जी.ए.डी. मेरे पास था, तो कहां मंत्रालय, कहां कक्ष, कहां बंगले, कहां विधानसभा होगी ये सब मैं देख रहा था। उस समय यह केन्द्रीय सरकार के केंद्रीय जल ग्रहण का एक निर्माणाधीन भवन था। हम लोग जब पहली बार यहां देखने आये तो यहां आवाज गूंजती थी। पहले ये तय किया गया कि हमारे विधानसभा का पहला सत्र और हमारा शपथ ग्रहण यहीं होना चाहिए। आपत्तियां थीं, तत्कालीन ठेकेदार की 8-10 करोड़ रूपये की देनदारी थी लेकिन जोगी जी ने कहा कि विधानसभा सत्र तो जशपुर हाल में लगायेंगे और महाराज साहब के राजकुमार कालेज में एक बड़े हाल को बनाया गया। ये सारी चेयर-कुर्सियां वहां लगाई गईं। बाद में आज ये विधानसभा का जो स्वरूप है वह माननीय जोगी जी ने तय किया था कि किस तरीके से विधानसभा होगी, कहां स्पीकर के चेंबर होंगे, कहां माननीय मुख्यमंत्री जी के होंगे।

अध्यक्ष महोदय, सारे लोगों ने माननीय जोगी जी को याद किया। अध्यक्ष जी, उनको सरकार में काम करने का अवसर ही कितना मिला था? तीन साल की तो कुल सरकार थी। पहले साल तो कौन अधिकारी कहां बैठेंगे, मंत्री कहां रहेंगे, प्रशासनिक कार्य कैसे संचालित करेंगे, हमारी आफिसेस कैसे लगेंगी, किसको क्या जिम्मेदारी देना है इसमें निकल गया और उनको काम करने का अवसर तो एक-डेढ़ साल भर मिल पाया था। आखिरी साल तो चुनाव का साल होता है। लेकिन जितनी भी बातें माननीय सदस्यों ने कही, जितनी भी उपलब्धियां गिनाईं वह जोगी जी के केवल डेढ़ साल के कार्यकाल की उपलब्धियां हैं। निर्णय लेने में जो प्रशासनिक दक्षता और क्षमता हम लोगों ने देखा, सरकारों में बहुत बार हम लोग काम किए हैं लेकिन एक बार कोई निर्णय अगर तय कर ले, रात को शपथ ग्रहण हुआ दूसरे दिन उन्होंने तय किया कि सी.एस.ई.बी. बनाना है, मध्यप्रदेश विद्युत मंडल को तत्काल विभाजित करना है तो कोई ताकत रोकने का नहीं। पहले दिन ही छत्तीसगढ़ को उर्जा के मामले में आत्मनिर्भर करना है ये उनकी जिद थी। एम.पी.एस.आर.टी.सी. के छत्तीसगढ़ में विभाजन के बाद उन्होंने कहा कि समाप्त किया जाना चाहिए। उन्होंने तो हाऊसिंग बोर्ड को भी समाप्त कर दिया था। वह निर्णय लेते थे। अभी अकबर भाई कह रहे थे ना कि हम लोग तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उनकी सरकार में मंत्री थे, रात को नोटशीट अगर रात के 11.00 बजे भी माननीय अजीत जोगी जी को हम लोग मार्गदर्शन, अवलोकन, आदेशार्थ भेजते थे तो जोगी जी सबेरे साढ़े आठ बजे लिफाफा बंद करके एक पेज की नोटिंग करके खुद ए.पी.के. लिखकर के फाईल वापस करते थे। उनका काम करने का तरीका छत्तीसगढ़ में हम लोगों ने सीखा है। अध्यक्ष महोदय, अभी आदरणीय अमरजीत भगत जी कह रहे थे ना कि उनके हर भाषण में अमीर धरती के गरीब लोग होता था। छत्तीसगढ़ की गरीबी, छत्तीसगढ़ के विकास के प्रति उनकी सोच और छत्तीसगढ़ को किस तरीके से आगे ले जाना है वह हमेशा अपनी बातों में कहा करते थे कि हम इसे हरियाणा से ज्यादा समृद्ध बनायेंगे, हम अपने छत्तीसगढ़ को गुजरात से ज्यादा विकसित राज्य बनायेंगे। विधान सभाओं के भाषण, जशपुर हॉल के पहले भाषण में उन्होंने कहा था "सपनों का सौदागर", का आशय यह था कि हम छत्तीसगढ़ के विकास के सारे सपने देख रहे हैं। हम सब लोगों ने उनको सुना था। उनके साथ बहुत प्रकार से बातें होती थीं। अभी उनको अकबर भाई, बृजमोहन जी ने याद किया। हम तीनों छात्र संघ के अध्यक्ष थे जब वे रायपुर के कलेक्टर थे उसके बाद हम लोगों ने देखा जब देश में कांग्रेस के बड़े नेता हुआ करते थे तेन्दूपत्ता नीति अर्जुन सिंह जी के जमाने से लेकर, उसके बाद हमने उनको अपने मुख्यमंत्री के रूप में देखा। लगभग एक दशक विरोधी और विपक्ष के रूप में माननीय अजीत जोगी जी को हमने देखा। सब प्रकार से उनके साथ हम लोगों ने काम किया। छत्तीसगढ़ के विकास के प्रति उनकी सोच हुआ करती थी। डिवियर्स की याद कर रहे थे, हीरा खदान की याद कर रहे थे। हम लोग दिग्विजय सिंह जी के मंत्रिमण्डल में मंत्री थे। डिवियर्स को सर्वे का काम दिया गया था। जोगी जी ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य की संपदा पर किसी को हम आने ही नहीं देंगे। वे कांग्रेस के सांसद थे। ऑल इण्डिया के प्रवक्ता थे, कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष थे, लेकिन आदरणीय दिग्विजय सिंह जी के निर्णय के खिलाफ विपक्ष की लड़ाई आप लड़ते थे तो जोगी जी उस लड़ाई में कमी नहीं करते थे। छत्तीसगढ़ के लिए उनके मन में ये सोच हुआ करती थी जब नया राज्य बना। हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी उस जमाने में राजस्व मंत्री थे। प्रदेश में राहत कार्य की जरूरत थी, काम के बदले अनाज योजना थी। पता नहीं, छत्तीसगढ़ में कितना दुशकाल पड़ा था। हम लोगों के भी कल्पना से बाहर था कि 7 हजार करोड़ के बजट में छत्तीसगढ़ का विकास भी करना है, प्रशासनिक अमले को तनख्वाह भी देना है, ये सब नवनिर्माण भी करना है और यहां के मजदूरों को काम भी देना है और उनको भोजन भी मुहैया कराना है, ये कैसे संभव हो पाएगा ? अकबर भाई, आदरणीय भूपेश जी, सत्तू भईया, ताम्रध्वज भईया सब लोग उस समय मंत्री थे, अमितेश जी पंचायत मंत्री थे हम लोग भी सरकार में थे उन्होंने वह करके दिखा दिया। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक कहावत सी बन गई थी। उस समय धान की खरीदी हो रही थी हम सब लोग अटल जी के सामने प्रदर्शन करने गये थे हम तो पहली बार जोगी जी को इतना तेज दौड़ते हुए देखे, हम सब की गिरफ्तारी होनी थी, हम और माननीय नंदकुमार पटेल जी हमेशा एक साथ चला करते थे । अब वहां ऐसा तय हो गया, पता नहीं तुगलक रोड, वहां पर क्या थाना था, उसके सामने बोले कि अटल जी से मुलाकात नहीं होगी, किसी को जाने नहीं दिया जायेगा। सबकी गिरफ्तारी होगी। जोगी जी बोले कि अब दौड़कर प्रधानमंत्री निवास पहुंचना है और उन्होंने सबसे पहली दौड़ लगायी। वे दुबले-पतले भी थे, वे बहुत तेजी से दौड़ जाते थे । उनके पीछे-पीछे चलते हुए हम और नंदकुमार जी थक जाते थे। वे उम्र में बहुत ज्यादा थे। वहां हमारी गिरफ्तारी हुई उसके बाद अटल जी से हमारी मुलाकात हुई। आज जो छत्तीसगढ़ में आपको धान खरीदी दिख रहा है, उसकी शुरूआत जोगी जी ने की। माननीय रामचन्द्र सिंहदेव जी, साहब हमारे वित्तमंत्री थे। हमेशा कहते थे कि 400 करोड़ रूपये का घाटा होगा। धान खरीदी कैसे संभव है ? एकाध बार कैबिनेट में ये प्रस्ताव

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लगभग वापस भी हो गया था। माननीय धनेन्द्र भईया भी उस सरकार में थे एक सब कमेटी बनायी गई थी। मैं और नंदकुमार पटेल, माननीय भूपेश बघेल जी राजस्व मंत्री थे और उस समय माननीय धनेन्द्र भईया मंत्री थे सब लोगों की कमेटी बनी और यह तय किया गया कि छत्तीसगढ़ में अगर धान खरीदी शुरू नहीं होगी तो छत्तीसगढ़ बनाने का तुक, मतलब ही क्या है ? सिंहदेव साहब ने पूछा कि आप धान को कहां रखोगे? और उस समय कहावत सी बन गई थी कि जितना भाठा, टिकरा दिख रहा है वहां धान रखा जाएगा और जितना ढोली, ढाबा दिख रहा है वहां राहत कार्य का चावल रखा जाएगा। उन तीन सालों में मजदूरों के हर घर में इतना चावल उपलब्ध था, ये जोगी जी की पहचान थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रायमरी सोसायटी से धान खरीदी करना, ये उसी समय का निर्णय हुआ। उस समय बहुत सारे निर्णय हुए, हम लोगों ने बहुत सारी उपलब्धियां गिनाई। उस समय छत्तीसगढ़ में मेरे पास विधि विभाग था । जब मध्यप्रदेश में मैं उच्च शिक्षा मंत्री था। माननीय दिग्विजय सिंह जी ने मैंने आग्रह किया। उस समय 5 सालों के लॉ कोर्स बहुत कम हुआ करते थे मध्यप्रदेश में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ शुरू हो, वहां हमने वह काम किया था। वहां एक ओपन यूनिवर्सिटी भोज की शुरूआत की थी और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ शुरू किया था। मैंने जोगी जी से विधि मंत्री के रूप में आग्रह किया कि छत्तीसगढ़ में भी एक लॉ की अच्छी फैक्लटीज हो, एक अच्छा इंस्टीट्यूशन लाया जाये, अच्छा कोर्स बनाया जाए तो उन्होंने कहा कि आप इसका काम शुरू करिये और आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि जिस काम को करने में मुझे मध्यप्रदेश में ज्यादा वक्त लगा था, यह जो छत्तीसगढ़ की हिदायतुल्ला लॉ यूनिवर्सिटी है, यह उसी कार्यकाल का है, माननीय जोगी जी ने उस काम को तत्काल स्वीकृति दी और उनके ही कार्यकाल में डेढ़ साल के भीतर उसी समय हिदायतुल्ला लॉ यूनिवर्सिटी शुरू की गई थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जो नई राजधानी की बात होती है, उस समय आवास, पर्यावरण और नई राजधानी का पूरा विभाग मेरे पास था, हमारे साथ आदरणीय विवेक ढांढ जी सचिव हुआ करते थे। हम लोगों ने कितनी बार नई राजधानी का चक्कर लगाया। हम लोगों के मुंबई के सिडको के साथ समझौते हुए। हम लोग मलेशिया की राजधानी पुत्रजया गये थे, नया राजधानी का कांसेप्ट वहीं से है। आज जो राजधानी दिख रही है, आदरणीय जोगी जी ने उसको उस समय फाइनल किया था, हालांकि आपने थोड़े बदलाव कर दिया। जहां पर सबसे खूबसूरत जगह थी, जहां मंत्रालय बनाने की बात आदरणीय जोगी जी ने कही थी, आदरणीय सोनिया गांधी जी ने भूमिपूजन किया था, आपने थोड़ी सी जगह बदल दी। जिस जगह पर केपिटल का पूरा प्रोजेक्ट आना था, जहां गवर्नर हॉउस, सी.एम. हॉउस बनना था, वहां पता नहीं किस तरीके से आप लोगों ने किसी होटल को कौड़ी के मोल उस जमीन को दे दिया, राजधानी का स्वरूप ही आपने बदल दिया। लेकिन वह राजधानी जो आज दिख रही है, वह राजधानी आदरणीय जोगी जी की देन है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक सबसे याद करने की बात है, मुझे अभी माननीय अजय जी याद करते हुए कह रहे थे, मैं संसदीय कार्य मंत्री था। विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव लाया। यहीं बैठते थे, उस समय विपक्ष आज से थोड़ा ज्यादा ताकतवर थे। जोगी जी के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया, जोगी जी ने कहा कि हम खुद बहिष्कार करेंगे। हमने कहा कि आप कैसे बहिष्कार कर देंगे? अविश्वास प्रस्ताव का तो सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि सामना करना पड़ता है तो ये सामूहिक जिम्मेदारी है, आप संसदीय कार्य मंत्री हो तो आप अपनी जगह में बैठना। तो मैंने कहा कि मैं अकेले कैसे बैठूंगा मुझे पानी पीने भी जो जाना पड़ सकता है। उस समय रामलाल भारद्वाज जी हमारे सचेतक हुआ करते थे, वह पलारी से विधायक थे। उन्होनें कहा कि उसको भी रख लिये रहना। सारे सदन में उस समय कांग्रेस की सरकार में मुख्यमंत्री जोगी जी सहित पूरी सरकार इस सदन से बाहर थी। अविश्वास प्रस्ताव में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उस दिन भी पता नहीं यह लोग कितना पढ़कर आये थे कि कितना पूरे छत्तीसगढ़ी के शब्दों में, मुहावरों में गालियां हुआ करती थीं, मैं अपने जीवन में पहली बार इतना सुना था। माननीय अध्यक्ष महोदय, सारे विपक्ष के लोगों ने साढ़े 10 बजे से विधानसभा की शुरूआत हुई थी और लगभग रात्रि के ढाई, पौने तीन बजे तक क्रमश: नंदकुमार साय जी से लेकर आखिरी मोर्चे तक हर कोई गाली देते रहा मैं यहां बैठा सुनता रहा। मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछा कि इनकी खाली गाली सुनना भर है? तो वह मेरे को बोले कि उसको नोट भी कर लेना। माननीय अध्यक्ष जी, अब उस गाली को मैं कैसे नोट करता। उनमें क्षमता थी। कुछ भी जो जिद कर लेते थे, अभी डॉक्टर रमन सिंह जी कह रहे थे कि वह बहुत जिद्दी थे। वह चुनौती देते रहते थे। इसी सदन में आखिरी बार आदरणीय जोगी जी सबसे पीछे बैठे थे, उनका प्रश्न चल रहा था, आदरणीय अमरजीत भगत जी उत्तर दे रहे थे। आदरणीय अमरजीत भगत जी हर बार उनके प्रश्न का उत्तर दे देते थे। एक बार उन्होंने कहा कि अमरजीत तो मोरे चेला हे। तो मैं खड़ा होकर बोल गया कि-" गुरू तो गुड़ रह गया, चेला शक्कर हो गया।" आखिरी बार मेरे को वहां से बोले हॉ बहुत दिन हो गये, मैं साजा नई आये हौं ना। माननीय जोगी जी आखिरी बार सदन में मेरे से इस तरीके बात किये थे। इन सबके बावजूद भी वह खूब प्रतिभाशाली थे। यहां वह एस्कार्ट का हॉस्पिटल लाये थे, कुतुंबमीनार जैसा गिरौधपुरी का जैतखंभ, कवर्धा का शक्कर कारखाना, क्रिकेट का स्टेडियम, पता नहीं उन एक-डेढ़ सालों में उनका किस प्रकार से काम करने माद्दा था, वह जो निर्णय लेते थे, एक ही बार में निर्णय लेते थे। माननीय अध्यक्ष जी, सौभाग्य से जिस छत्तीसगढ़ी, छत्तीसगढ़िया कि वह बात किया करते थे, हम लोग उसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हम लोग छत्तीसगढ़ का विकास करना चाहते हैं। मैं माननीय जोगी जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय डेरहू प्रसाद धृतलहरे जी मध्यप्रदेश की विधानसभा में, छत्तीसगढ़ की विधानसभा में हम लोगों ने विधायक के रूप में भी एक-साथ काम किया, मंत्रिमण्डल के साथी के रूप में काम किया । हम लोग बेमेतरा से हैं तो हमारा और श्री डेरहू प्रसाद जी का बिल्कुल हर मीटिंग में आना-जाना लगा रहता था । बिल्कुल गांव से गरीब के घर से उठकर के राजनीति में अपने दम पर जब कांग्रेस ने टिकट भी नहीं दिया तो वे निर्दलीय चुनाव भी जीते और बहुत सर्वहारा के लिये काम करने वाले हमारे साथी थे, उनका जाना भी हम सभी लोगों के लिये बहुत दुखद है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलिहार दादा के साथ हम लोग मध्यप्रदेश की विधानसभा में बैठते थे । हम उस समय विपक्ष में थे, दादा फूड डिपार्टमेंट के मंत्री थे, उतने ही सज्जन थे जैसा मेरे मामा अभी फूड डिपार्टमेंट के थोड़े दिन पहले मंत्री थे श्री पुन्नूलाल मोहले जी । वे भी पीछे बैठते थे । दादा आराम से बैठे रहते थे । एकाध प्रश्न भी धोखे से लग जाता था न तो दादा का उत्तर भी समझ लेना, वे उत्तर देते थे या नहीं देते थे यह समझ में नहीं आता था लेकिन सब लोग संतुष्ट हो जाते थे । उनका गांधीवादी करेक्टर था, वे बहुत सज्जन व्यक्ति थे । उनके साथ भी हम लोगों ने काम किया । माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती रजनीगंधा देवी जी को हमने देखा नहीं है लेकिन सारंगढ़ राजपरिवार का जो सेवा का इतिहास है । वह भी पार्लियामेंट की मेम्बर रही हैं तो उनका जाना भी छत्तीसगढ़ के लिये अपूर्णीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, चाईना बॉर्डर में हमारे जो जवान शहीद हुए मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । हमारे छत्तीसगढ़ के शहीद श्री गणेश कुंजाम की शहादत को चूंकि माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं वहां उन्हें कंधा देने के लिये उपस्थित हुए थे, उनको हम प्रणाम करते हैं । मैं चाईना बॉर्डर के बारे में बहुत ज्यादा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बातें नहीं कहता लेकिन अभी की क्या परिस्थिति है उसको देश जानना चाहता है । परिस्थितियां क्या हैं, गलवान घाटी की स्थिति क्या है ? अखबारों में हम जो पढ़ते हैं वह हम सबके लिये चिंताजनक है । जो कोरोना वारियर्स हैं या कोरोना के कारण जो शहीद हुए हैं उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और नक्सल मूवमेंट में भी छत्तीसगढ़ को लगातार हमारे जवानों की शहादत आज पर्यंत हो रही है, हम लगातार उनको प्रणाम करते हैं, मैं उनको श्रद्धांजलि देता हूं और सभी जिन-जिन लोगों का जिक्र माननीय अध्यक्ष जी आपने, माननीय मुख्यमंत्री जी या माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने किया, सभी के प्रति मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं । दिवंगतों एवं शहीदों के सम्मान में अब सदन दो मिनट का मौन धारण करेगा ।

(सदन द्वारा खड़े रहकर दो मिनट का मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों एवं शहीदों के सम्मान में सदन की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 26 अगस्त, 2020 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित ।

(अपराह्न 1 बजकर 25 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 26 अगस्त, 2020 (भाद्रपद-4, शक संवत् 1942) के पूर्वाह्न 11:00 बजे दिन तक के लिये स्थगित की गई।)

चन्द्र शेखर गंगराड़े
प्रमुख सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक : 25 अगस्त, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं